बीसीसीएल
BCCL
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
Bharat Coking Coal Limited

अंक - 41, अर्ध वार्षिक
सितंबर, 2024

कोयला भारती

बीसीसीएल की गृह पत्रिका

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

(एक मिनीरत्न कंपनी)
(कोल इण्डिया लिमिटेड की एक अनुषंगी कंपनी)
कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद- 826005

विशिष्ट गतिविधियाँ

दिनांक 15 अगस्त, 2024 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर परेड की सलामी लेते हुए कंपनी के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता।

दिनांक 29 जून, 2024 को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, धनबाद द्वारा विशेष लोक अदालत का आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं झारखंड उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री सुजीत नारायण प्रसाद और अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, बीसीसीएल के साथ ही अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा बीसीसीएल में अनुकंपा आधारित नौकरी पाने वाले 39 पात्र लाभार्थियों को नियुक्ति पत्र सौंपे गये।

दिनांक 14 मार्च, 2024 को कंपनी में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में कंपनी के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता, निदेशक (कार्मिक) श्री मुरली कृष्ण रमैया, स्वतंत्र निदेशक श्रीमती शशि सिंह, दीक्षा महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मिली दत्ता, उपाध्यक्ष श्रीमती पूर्बिता रमैया, श्रीमती नमिता सहाय विशेष रूप से उपस्थित रहीं।

कंपनी द्वारा दिनांक 11 जून, 2024 को होटल ली मेरिडियन, नई दिल्ली में स्टील सेक्टर के अपने उपभोक्ताओं के साथ एक सम्मेलन एवं संवादात्मक परिचर्चा-सत्र का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

दिनांक 23 अगस्त, 2024 को गोवा में आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन में बीसीसीएल को अपने सीएसआर संबंधी उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रतिष्ठित सीएसआर टाइम्स अवार्ड - गोल्ड से सम्मानित किया गया।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में सतर्कता जागरूकता अभियान 2024 का शुभारंभ दिनांक 06 अगस्त, 2024 को श्री ब्रजेश कुमार त्रिपाठी, मुख्य सतर्कता अधिकारी, कोल इंडिया के आगमन के साथ हुआ।

समीरन दत्ता
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
Samiran Dutta
Chairman-cum-Managing Director

बीसीसीएल BCCL
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
Bharat Coking Coal Limited

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
एक मिनी रत्न कम्पनी
(कोल इण्डिया लिमिटेड की एक अनुषंगी कंपनी)
BHARAT COKING COAL LIMITED
A Mini Ratna Company
(A Subsidiary of Coal India Limited)
कोयला भवन, कोयला नगर / Koyla Bhawan, Koyla Nagar,
धनबाद /Dhanbad-826005

अध्यक्ष की कलम से

कंपनी की गृह पत्रिका 'कोयला भारती' के 41वें अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस विशेष अंक का विमोचन राजभाषा पखवाड़ा-2024 के पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हो रहा है, जो इसे और भी महत्वपूर्ण बनाता है। 'कोयला भारती' केवल एक गृह पत्रिका नहीं है; यह भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की आत्मा की अभिव्यक्ति है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभा रही है, जो हमारे संगठन की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसके माध्यम से, हम न केवल हिंदी भाषा को बढ़ावा दे रहे हैं, बल्कि अपने कर्मचारियों की प्रतिभा और सृजनात्मकता को भी उचित मंच प्रदान कर रहे हैं।

हमारी कंपनी भारत की सबसे बड़ी कोकिंग कोल उत्पादक कंपनी है। कोयला खनन के जरिए हम राष्ट्र की ऊर्जा सुरक्षा और औद्योगिक प्रगति सुनिश्चित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। मुझे गर्व है कि बीसीसीएल की टीम ने इस दिशा में असाधारण सफलता हासिल की है। वर्ष 2023-24 बीसीसीएल के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में बीसीसीएल ने 41.10 मिलियन टन कोयला उत्पादन, 39.27 मिलियन टन ऑफ-टेक और 149.28 मिलियन क्यूबिक मीटर ओबीआर का नया कीर्तिमान स्थापित किया है। यह आंकड़े बीसीसीएल के सर्वकालिक उच्चतम आंकड़े हैं।

हमारे सभी हितधारकों के सहयोग से कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन में भी महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। हमारी शुद्ध बिक्री ₹13,216.17 करोड़ तक पहुंच गई है, और हमने इस वर्ष ₹ 1,546.64 करोड़ का शुद्ध लाभ दर्ज किया है। इस बेहतरीन वित्तीय प्रगति का परिणाम है कि हमने पहली बार अपना संचित घाटा समाप्त करके कोल इंडिया लिमिटेड को ₹ 44.43 करोड़ का लाभांश दिया है। यह हमारे बीसीसीएल परिवार के अद्वितीय समर्पण और टीम वर्क का प्रमाण है।

हम न केवल कोयला खनन में अग्रणी हैं, बल्कि अपने परिधीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की भलाई के लिए भी निरंतर प्रयासरत रहते हैं। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान कंपनी ने ₹10.09 करोड़ खर्च किए हैं, जो हमारे निर्धारित लक्ष्य ₹7.24 करोड़ से अधिक था। कंपनी द्वारा बेरोजगार युवाओं के लिए वर्ष के दौरान कई कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए हैं, जिनसे उन्हें रोजगार के बेहतर अवसर मिले हैं। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 580 बेरोजगार युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बाद 100% प्लेसमेंट हुआ है। कंपनी के लिए यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

धनबाद के पांच सरकारी स्कूलों में मिनी साइंस लैब स्थापित कर, हम विभिन्न विद्यालयों में स्मार्ट-क्लास की स्थापना से डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने का काम कर रहे हैं। कंपनी द्वारा एडसिल के सहयोग से डिजीविद्या परियोजना शुरू की जा रही है। इसके अंतर्गत 129 सरकारी स्कूलों में स्मार्ट कक्षाएं और आईसीटी लैब स्थापित की जाएंगी। परियोजना प्रभावित क्षेत्रों में रह रहे लोगों के कल्याण के लिए इस तरह की विभिन्न योजनाएं चलाने के लिए हम कृत संकल्पित हैं। इसके साथ ही पर्यावरण, स्वास्थ्य, सुरक्षा, संरक्षा, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों आदि के क्षेत्र में कंपनी में उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं।

कंपनी की प्रगति में सहयोग करने वाली सभी स्टेकहोल्डरों का मैं अत्यधिक आभार प्रकट करते हुए कंपनी की गृह पत्रिका 'कोयला भारती' के अंक-41 को प्रस्तुत करने के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाइयाँ प्रेषित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(समीरन दत्ता)

मुरली कृष्ण रमैया
निदेशक (कार्मिक)
Murli Krishna Ramaiah
Director (P)

बीसीसीएल
BCCL
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
Bharat Coking Coal Limited

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
एक मिनी रत्न कम्पनी
(कोल इण्डिया लिमिटेड की एक अनुषंगी कंपनी)
BHARAT COKING COAL LIMITED
A Mini Ratna Company
(A Subsidiary of Coal India Limited)
कोयला भवन, कोयला नगर / Koyla Bhawan, Koyla Nagar,
धनबाद /Dhanbad-826005

अपनी बात

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की गृह पत्रिका 'कोयला भारती' के अंक-41 के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। यह पत्रिका न केवल हमारी कंपनी की गतिविधियों का दर्पण है, बल्कि हमारे कर्मचारियों की प्रतिभा और सृजनशीलता का भी प्रतीक है।

'कोयला भारती' के माध्यम से हम एक महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति कर रहे हैं - राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार। यह गर्व की बात है कि हमारी यह पत्रिका राजभाषा के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित हो रही है। परंतु, हमें यहीं नहीं रुकना है। हमें अपने दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाना है, विशेषकर तकनीकी क्षेत्रों में। मैं सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह करता हूं कि वे अपने कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। यह न केवल हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत को संजोने का भी एक माध्यम है।

विशेष रूप से, मैं आप सभी को तकनीकी विषयों को हिंदी में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है, लेकिन यह असंभव नहीं है। हमारे पास पर्याप्त तकनीकी शब्दावली और संसाधन उपलब्ध हैं। आप अपने तकनीकी लेखों, रिपोर्ट्स और प्रस्तुतियों को हिंदी में तैयार करके न केवल राजभाषा के प्रचार में योगदान देंगे, बल्कि अपने सहकर्मियों के लिए भी एक प्रेरणास्रोत बनेंगे।

'कोयला भारती' इस दिशा में एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करती है। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप इस पत्रिका में अपने तकनीकी लेख, शोध पत्र और नवीन विचार हिंदी में प्रस्तुत करें। यह न केवल आपकी भाषायी क्षमता को बढ़ाएगा, बल्कि हमारे संगठन में ज्ञान के आदान-प्रदान को भी प्रोत्साहित करेगा।

हमारा राजभाषा विभाग आपकी हर संभव सहायता के लिए तत्पर है। वे आपको हिंदी में काम करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण, संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप इन संसाधनों का पूरा लाभ उठाएं।

अंत में, मैं 'कोयला भारती' के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल और राजभाषा विभाग की पूरी टीम को बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके समर्पण और हमारे सभी कर्मचारियों के सहयोग से, हम राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

आइए, हम सब मिलकर अपनी मातृभाषा और राजभाषा हिंदी को सम्मान दें और इसके प्रयोग को बढ़ावा दें। मुझे विश्वास है कि आप सभी इस राष्ट्रीय महत्व के कार्य में अपना पूर्ण योगदान देंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(मुरली कृष्ण रमैया)
निदेशक (कार्मिक)

संपादकीय

हिंदी की मजबूत वैश्विक स्थिति

हिंदी, जो एक समय केवल भारतीय उपमहाद्वीप की भाषा मानी जाती थी, आज विश्व के कोने-कोने में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। यह केवल भाषा नहीं, बल्कि एक संस्कृति, एक विचारधारा और एक जीवन शैली का प्रतिनिधित्व करती है। विश्व के लगभग 600 मिलियन लोग हिंदी बोलते या समझते हैं, जो इसे विश्व की दूसरी या तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बनाता है। यह आंकड़ा न केवल भारत में हिंदी भाषियों को दर्शाता है, बल्कि नेपाल, फिजी, मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो जैसे देशों में भी इसकी व्यापक उपस्थिति को प्रदर्शित करता है।

हिंदी की इस वैश्विक यात्रा में कई कारक महत्वपूर्ण रहे हैं। सबसे पहले, भारतीय डायस्पोरा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। दुनिया भर में फैले भारतीय मूल के लोगों ने अपनी मातृभाषा को न केवल जीवित रखा, बल्कि उसे अपने नए घर में भी फलने-फूलने का अवसर दिया। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और यूनाइटेड किंगडम जैसे देशों में भारतीय समुदाय ने हिंदी को एक जीवंत भाषा के रूप में स्थापित किया है। यहां हिंदी फिल्म समारोह, साहित्यिक गोष्ठियां और सांस्कृतिक कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, जो हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर लाते हैं।

दूसरा, बॉलीवुड की लोकप्रियता ने हिंदी को एक नया आयाम दिया है। फिल्मों और गीतों के माध्यम से, हिंदी ने लाखों गैर-भारतीय दर्शकों के दिलों में अपनी जगह बनाई है। उत्कृष्ट स्तर की फिल्मों ने न केवल भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर स्थापित किया, बल्कि हिंदी भाषा के सौंदर्य और भावनात्मक गहराई को भी प्रदर्शित किया। आज नेटफ्लिक्स और अमेज़ॅन प्राइम जैसे वैश्विक स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म हिंदी सामग्री में भारी निवेश कर रहे हैं, जो इसकी बढ़ती मांग को दर्शाता है।

तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। बड़ी तकनीकी कंपनियां जैसे गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, और एप्पल अपने उत्पादों और सेवाओं में हिंदी को प्राथमिकता दे रही हैं। यह न केवल भारतीय बाजार की क्षमता को दर्शाता है, बल्कि हिंदी की वैश्विक महत्ता को भी रेखांकित करता है। उपलब्ध उन्नत तकनीकी ने डिजिटल दुनिया में हिंदी को मुख्यधारा में ला दिया है। इसके अलावा हिंदी में ब्लॉगिंग, वीडियो कंटेंट क्रिएशन और सोशल मीडिया पोस्टिंग की बढ़ती प्रवृत्ति ने इंटरनेट पर हिंदी सामग्री की मात्रा और गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि की है।

शैक्षणिक क्षेत्र में भी हिंदी का प्रभाव बढ़ रहा है। विश्व के कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। दुनिया के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा और साहित्य के विभाग हैं। छात्र न केवल भाषा सीख रहे हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति, इतिहास और दर्शन को भी समझ रहे हैं। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। इसके अलावा, भारत सरकार की "स्टडी इन इंडिया" पहल ने विदेशी छात्रों को भारत में पढ़ने और हिंदी सीखने के लिए प्रोत्साहित किया है।

लेकिन इस सफलता के साथ कुछ चुनौतियां भी हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हिंदी की इस वैश्विक यात्रा में उसकी मूल प्रकृति और सौंदर्य बरकरार रहे। हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं का भी सम्मान हो। भाषाई विविधता भारत की ताकत है और हमें इसे बनाए रखना चाहिए। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी सामग्री की गुणवत्ता और मात्रा में सुधार करना होगा। हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन को बढ़ावा देना होगा ताकि यह ज्ञान के हर क्षेत्र में प्रासंगिक बनी रहे। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना होगा।

हिंदी की वैश्विक स्थिति आज पहले से कहीं अधिक मजबूत है। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक वैश्विक संवाद का माध्यम बन गई है। यह भारतीय संस्कृति का वाहक और वैश्विक शांति का दूत बन रही है। हमारा कर्तव्य है कि हम इस विरासत को संजोएं, इसे समृद्ध करें और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मजबूत नींव तैयार करें।

इन्हीं उद्देश्यों के साथ प्रकाशित की जाने वाले पत्रिका 'कोयला भारती' का अंक-41 आपको सौंपते हुए हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। पूर्व अंकों की भांति इस अंक को भी उपयोगी बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है। पत्रिका में अपनी रचनाओं के माध्यम से सहयोग करने वाले सभी विद्वान रचनाकारों के प्रति मैं हार्दिक आभारी हूँ। पाठकों की प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में ...

दिलीप कुमार सिंह
संपादक, कोयला भारती

अंक – 41, अर्ध वार्षिक
सितंबर, 2024

बीसीसीएल BCCL
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
Bharat Coking Coal Limited

कोयला भारती

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की गृह पत्रिका

अध्यक्ष
समीरन दत्ता
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

संरक्षक
मुरली कृष्ण रमैया
निदेशक (कार्मिक)

परामर्श
बिद्युत साहा
महाप्रबंधक (कार्मिक)/राजभाषा

विशेष सहयोग
सुरेन्द्र भूषण
विभागाध्यक्ष, प्रशासन विभाग

पंकज कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष, भुगतान विभाग

ओम प्रकाश सिंह
निदेशक (कार्मिक) के तकनीकी सचिव
निदेशक (कार्मिक) का सचिवालय

अमन कुमार सिंह
प्रबंधक (कार्मिक) प्रशासन विभाग

अरघा सामंता
वरिष्ठ अधिकारी (वित्त), भुगतान विभाग

उप संपादक
उदयवीर सिंह
प्रबंधक (राजभाषा), जनसंपर्क विभाग

सहयोग
महेन्द्र कुमार सिंह, वरीय निजी सहायक
अनिरुद्ध नोनिया, अनुवादक
वंदना देवी, अनुवादक

प्रकाशक
राजभाषा विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद- 826005
दूरभाष : 0326-2236463
फैक्स : 0326-2230262

'कोयला भारती' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं । इनसे प्रकाशक / संपादक / बीसीसीएल प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है । अतः पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार उत्तरदायी हैं। न्यायिक सीमा, धनबाद। निःशुल्क, आंतरिक वितरण हेतु।

संपादक
दिलीप कुमार सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)

अनुक्रम

सी एस आर
बीसीसीएल के कौशल विकास कार्यक्रम 5
तकनीकी आलेख
झरिया मास्टर प्लान- एक उम्मीद की किरण 8
कृत्रिम मेधा के दौर में हिंदी और भारतीय भाषाएं 10
झारखण्ड की रत्नगर्भा धरती व कोयला खनिज........ 15
सुरक्षा ईश्वर से तनिक भी कम नहीं 17
विशिष्ट तिथि - विशिष्ट अतिथि
माननीय कोयला एवं खान मंत्री का बीसीसीएल दौरा 20
माननीय कोयला एवं खान राज्य मंत्री का बीसीसीएल दौरा 21
पर्यावरण विमर्श
हरित प्रौद्योगिकी 22
समसामयिक चर्चा
आत्म-ध्वंसन 26
ओलंपिक खेलों में भारत 29
स्वास्थ्य चर्चा
अनमोल कुंदरू........ 31
आपका सच्चा जीवनसाथी 33
उत्तम जीवनशैली का महत्व 34
कहानी
बालकनी 35
लघु कथा
मेरे हिस्से की नींद 38
यात्रा संस्मरण
पैसेंजर ट्रेन का सफ़र 39
उत्सव
उत्सव-ए-मेघ मल्हार 40
काव्यकुंज
मेरे देश की मिट्टी 19
पूछता हूँ 19
कामगार महिला 30
इच्छा 32
संकल्पों से भाव सजा हो 37

नोटः 'कोयला भारती' पत्रिका में प्रकाशन हेतु आप अपनी रचनाएँ ई-मेल dilipsingh83@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

सी एस आर

बीसीसीएल के कौशल विकास कार्यक्रम

✍ बिद्युत साहा

'कौशल विकास' का मतलब है किसी व्यक्ति में कौशल की कमी को पहचानना और यह सुनिश्चित करना कि वह इन कौशलों को विकसित करे। आज के समय में हम पाते हैं कि उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं को भी रोजगार नहीं मिल पा रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि अधिकांश युवाओं के पास डिग्रियां तो हैं, किंतु उनमें वह कौशल नहीं है जिसकी उद्योग जगत में आवश्यकता है। देश के कई प्रमुख उद्योगपतियों द्वारा विभिन्न मंचों पर भारतीय युवाओं में कौशल के अभाव को लेकर चिंता जाहिर की गई है। यह भी विरोधाभास है कि एक ओर जहां भारतीय उद्योग कुशल श्रमशक्ति की कमी से जूझ रहा है, वहीं दूसरी ओर भारतीय युवा वर्ग बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहा है।

आधुनिक समय में, कौशल विकास कार्यक्रम पारंपरिक शिक्षा से एक कदम आगे है। इसे वांछित कैरियर या रोजगार के लिए अधिक सुव्यवस्थित दृष्टिकोण माना जा सकता है। कौशल विकास कार्यक्रमों अथवा कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य, उद्योग जगत की मांग को ध्यान में रखते हुए कुशल एवं प्रशिक्षित श्रमशक्ति तैयार करना है। इनमें अक्सर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, ताकि उम्मीदवारों में रोजगार प्राप्त करने के लिए आवश्यक गुणों एवं क्षमताओं को विकसित किया जा सके। इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम उनके लिए काफी उपयोगी है जो अपने काम में बदलाव लाना चाहते हैं अथवा किसी रोजगार की तलाश में हैं।

बीसीसीएल द्वारा अपने कमान क्षेत्र में रहने वाले स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार उन्मुख कौशल आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। परियोजना प्रभावित परिवारों से आने वाले युवाओं के लिए रोजगार सृजन करने और कुशल श्रमशक्ति की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के लिए प्रत्येक वर्ष ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। वर्ष के दौरान, कंपनी द्वारा राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न प्रतिष्ठित उद्योगों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणित कुशल श्रमशक्ति उपलब्ध कराया गया है।

कंपनी द्वारा प्रदान किये गए 'कौशल विकास' प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण निम्नलिखित है:

क) सीआईपीईटी में पेट्रोकेमिकल इंजीनियरिंग पर कौशल विकास

बीसीसीएल ने झारखंड के सुदूर इलाकों में रहने वाले युवा छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर और आजीविका के अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाया है। इस

संबंध में, केंद्रीय पेट्रोकेमिकल इंजीनियरिंग प्रशिक्षण संस्थान (सीआईपीईटी) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया है। कंपनी ने वित्त वर्ष 2023-24 में धनबाद जिले (मुख्य रूप से परियोजना प्रभावित व्यक्तियों) के 80 उम्मीदवारों को पेट्रोकेमिकल इंजीनियरिंग में प्रशिक्षण प्रदान किया है। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद, लगभग 100% इच्छुक छात्रों को राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित कंपनियों में रोजगार उपलब्ध कराया गया है। इस परियोजना की कुल वित्तीय लागत लगभग ₹ 56 लाख है।

कार्यान्वयन: एमओयू के माध्यम से, एजेंसी: सीआईपीईटी (रांची एवं हाजीपुर)

ख) बीएफएसआई (बैंकिंग, वित्तीय सेवाएं एवं बीमा) पर कौशल विकास प्रशिक्षण - क्रेडिट प्रोसेसिंग अधिकारी

बीसीसीएल ने प्रमिथ फाउंडेशन, कोलकाता के सहयोग से धनबाद जिले के 150 युवाओं को बीएफएसआई-क्रेडिट प्रोसेसिंग ऑफिसर के पद के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान किया है।

छात्रों ने बैंकिंग एवं निवेश, बीमा जैसी विभिन्न वित्तीय सेवाओं का प्रबंधन, जोखिम प्रबंधन, व्यक्तियों एवं व्यवसायों के लिए वित्तीय सुविधाएं प्रदान करना सीखा। इस प्रशिक्षण के लिए 960 घंटे निर्धारित थे और इसमें उम्मीदवारों के लिए आवास एवं भोजन की सुविधा भी प्रदान की गई थी। छात्रों ने इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया और इन छात्रों को झारखंड एवं पश्चिम बंगाल राज्य में आदित्य बिड़ला समूह, उज्जीवन फाइनेंस, एसबीआई कासा (सीएएसए) आदि जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में 100% प्लेसमेंट भी मिल गया।

इस परियोजना के लिए ₹ 41.74 लाख का व्यय किया गया। दिनांक 03.07.2024 को उम्मीदवारों के लिए जुबली हॉल,

कोयला नगर, धनबाद में एक प्रमाण पत्र सह प्रस्ताव पत्र (ऑफर-लेटर) वितरण समारोह का आयोजन किया गया था।

कार्यान्वयन: ईओआई (प्रमिथ फाउंडेशन, कोलकाता)

ग) इंडो डेनिश टूल रूम, वाराणसी के माध्यम से विभिन्न ट्रेडों में कौशल विकास प्रशिक्षण (आईडीटीआर जमशेदपुर का एक विस्तार केंद्र)

इंडो डेनिश टूल रूम वाराणसी के माध्यम से 30 उम्मीदवारों को सीएनसी मिलिंग, रूम एयर कंडीशनर तथा घरेलू उपकरण तकनीशियन (आरएसीएचए) और हैंड हेल्ड प्रोडक्ट तकनीशियन ट्रेडों में कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण अवधि के दौरान, उम्मीदवारों ने लगभग 03-06 महीनों तक औद्योगिक वस्तुओं का उत्पादन करने वाली मशीनों के रख-रखाव करने और विभिन्न उपकरणों की मरम्मत में विशेषज्ञता प्राप्त की।

छात्रों को, कक्षा प्रशिक्षण पूरा होने के बाद विभिन्न उद्योगों में नौकरी के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर भी प्रदान किया जाता है। अंतिम मूल्यांकन के बाद छात्रों को भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है और प्लेसमेंट के साथ-साथ उद्यमशीलता का अवसर भी प्रदान किया जाता है। इस परियोजना की लागत ₹ 24.49 लाख थी।

कार्यान्वयन: आईडीटीआर, वाराणसी के माध्यम से

घ) जनरल ड्यूटी असिस्टेंट (जीडीए)- एडवांस पर कौशल विकास

बीसीसीएल और प्रमिथ फाउंडेशन, कोलकाता के बीच हुए एक समझौता के माध्यम से प्रमिथ फाउंडेशन, कोलकाता द्वारा पाटलिपुत्र मल्टी-स्पेशियलिटी अस्पताल में 120 छात्राओं को जनरल ड्यूटी असिस्टेंट (जीडीए)- एडवांस का कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। लाभार्थी बीसीसीएल, धनबाद के आस-पास के क्षेत्रों में रहने वाली महिलाएं हैं, जिनमें से 76% ओबीसी श्रेणी तथा पिछड़े वर्ग से आती हैं। कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से स्थायी आजीविका में वृद्धि कर लाभार्थियों को रोजगार के लिए तैयार करना है। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद एनएसडीसी द्वारा लाभार्थियों का मूल्यांकन और प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा और उन्हें झारखंड और पश्चिम बंगाल के अस्पतालों और नर्सिंग होमों में रोजगार

उपलब्ध कराया जाएगा। छात्र इस कार्यक्रम में शामिल होकर और अपने कैरियर को लेकर काफी उत्साहित हैं। इस परियोजना की लागत लगभग ₹ 29.64 लाख है।

कार्यान्वयन: ईओआई, एजेंसी के माध्यम से: प्रमिथ फाउंडेशन, कोलकाता

ङ) एमएसडीआई द्वारा बेलगरिया पुनर्वास टाउनशिप में 60 महिलाओं के लिए फैशन उद्यमिता (परिधान + ईडीपी) में कौशल विकास प्रशिक्षण

बीसीसीएल ने एनएसडीसी के सहयोग से बेलगरिया पुनर्वास टाउनशिप की 60 महिलाओं को फैशन उद्यमिता (परिधान+ईडीपी) में कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए एक मल्टी स्किल डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट (एमएसडीआई) की स्थापना की है। महिला

उम्मीदवारों को संचार कौशल, व्यवहारिक एवं सकारात्मक सोच और इससे संबंधित सॉफ्ट स्किल्स पर भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है।यह परियोजना वर्तमान में वित्त वर्ष 2024-25 में चल रही है और उम्मीदवारों को प्रशिक्षण पूरा होने के बाद वस्तुओं की वापस खरीद के लिए प्लेसमेंट के अवसरों और उद्योग से जोड़ा जाएगा। इस परियोजना की लागत लगभग ₹ 86.54 लाख है।

कार्यान्वयन: राष्ट्रीय कौशल विकास निगम, एनएसडीसी के साथ समझौता ज्ञापन

बीसीसीएल अपनी विभिन्न सीएसआर गतिविधियों के माध्यम से समाज को सहयोग करने का प्रयास करने वाला एक जिम्मेदार कॉरपोरेट रहा है। बीसीसीएल ने अपनी सीएसआर गतिविधियों के माध्यम से समाज के उन्नयन में लगातार निवेश किया है। बीसीसीएल अपने परिचालन क्षेत्र यानी धनबाद जिले के साथ-साथ संपूर्ण झारखंड राज्य में सामाजिक विकास को बढ़ावा देने वाली एक प्रमुख कंपनी है और जो भविष्य में भी बड़े पैमाने पर अपना योगदान देना जारी रखेगी। यह कंपनी वास्तव में इस कहावत में विश्वास रखती है कि "वह सब कुछ जो इस समाज में मूल्यवान है, वह सभी के विकास के अवसर पर ही निर्भर करता है

महाप्रबंधक (का./सीएसआर)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

तकनीकी आलेख

झरिया मास्टर प्लान- उम्मीद की एक किरण

फुल झा
महाप्रबंधक, झरिया मास्टर प्लान विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

चन्दन कुमार
उप प्रबंधक, झरिया मास्टर प्लान विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

झरिया मास्टर प्लान का प्राथमिक उद्देश्य झरिया कोयला क्षेत्र में दशकों से जल रही भूमिगत आग और व्यापक भूमि धंसान की जटिल समस्या का समाधान करना है। यह योजना एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाती है, जिसमें प्रभावित क्षेत्रों का पुनर्विकास स्थानीय समुदायों का सुरक्षित पुनर्वास, और क्षेत्र का दीर्घकालिक सतत विकास शामिल है। इसका लक्ष्य है कोयला आग को नियंत्रित करने के लिए उन्नत तकनीकों का उपयोग, असुरक्षित भूमिगत खदानों को वैज्ञानिक तरीके से बंद करना और खुली खदानों का नियोजित विस्तार करना।

साथ ही, यह योजना प्रभावित परिवारों को बेहतर बुनियादी सुविधाओं वाले सुरक्षित स्थानों पर पुनर्वासित करने पर ज़ोर देती है, जिससे उनका जीवन स्तर सुधरे और उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुंच मिले। रोजगार सृजन और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से स्थानीय लोगों के लिए वैकल्पिक आजीविका के अवसर विकसित करना भी इस योजना का एक महत्वपूर्ण पहलू है। पर्यावरण संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिसमें वायु और जल प्रदूषण को कम करना, जल संसाधनों का कुशल प्रबंधन, और क्षतिग्रस्त भूमि का पुनरुद्धार शामिल है। इसके अलावा, योजना का उद्देश्य क्षेत्र में आधुनिक शहरी बुनियादी ढांचे का विकास करना, परिवहन नेटवर्क को मजबूत करना और स्थानीय अर्थव्यवस्था को विविधता प्रदान करना है। अंततः झरिया मास्टर प्लान का लक्ष्य इस क्षेत्र को एक सुरक्षित, स्वस्थ और समृद्ध स्थान में बदलना है, जहां आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाया जाए, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर भविष्य सुनिश्चित हो सके।

झरिया मास्टर प्लान एक रणनीतिक ढांचा है जिसका उद्देश्य भारत के झरिया, झारखंड में कोयले की आग, धंसाव और संबंधित पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों से संबंधित जटिल मुद्दों को सुलझाना है।

झरिया मास्टर प्लान के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:-

1. **कोयला आग शमन:** प्राथमिक लक्ष्य कोयले की आग को बुझाना या नियंत्रित करना है ताकि उनके पर्यावरणीय प्रभाव को कम किया जा सके और स्थानीय आबादी के लिए खतरों को कम किया जा सके।

2. **पुनर्वास और पुनरुद्धार:** झरिया में कई क्षेत्र अब भूमिगत आग से होने वाले धंसान के कारण रहने के लिए सुरक्षित नहीं है। योजना में प्रभावित समुदायों को सुरक्षित स्थानों पर पुनर्स्थापित करना और उनकी आजीविका सुनिश्चित करने के लिए उपाय प्रदान करना शामिल है।

3. **बुनियादी ढांचे का विकास:** पुनर्वासित आबादी के लिए रहने की स्थिति में सुधार लाने और सतत विकास की सुविधा के लिए सड़क, जल आपूर्ति, स्वच्छता सुविधाओं और बिजली जैसे बुनियादी ढांचे का उन्नयन करना।

4. **सामाजिक और आर्थिक विकास:** आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देना और कौशल विकास, शिक्षा और रोजगार सृजन के माध्यम से स्थानीय समुदायों के लिए अपने जीवन स्तर में सुधार करने के अवसर पैदा करना।

झरिया मास्टर प्लान के कार्यान्वयन में सरकारी एजेंसियों, पर्यावरण विशेषज्ञों और स्थानीय समुदायों सहित विभिन्न हितधारकों के बीच समन्वय शामिल है।

1971-72 में, भारत ने कोयला खदान (राष्ट्रीयकरण) अधिनियम के माध्यम से अपने कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया। राष्ट्रीयकरण के समय, झरिया कोयला क्षेत्र में कुल आग क्षेत्र 17.32 वर्ग किलोमीटर था। भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (कोल इंडिया लिमिटेड की एक सहायक कंपनी) ने कोयला खदान की आग से निपटने के लिए विभिन्न तरीकों को लागू किया है, जिसमें ट्रेंच कटिंग, नाइट्रोजन फ्लशिंग, वॉटर पॉन्डिंग और सोडियम सिलिकेट इंजेक्शन शामिल हैं। वर्तमान में इसकी प्राथमिक रणनीति में आग बुझाने के लिए खनन शामिल है। यह एक ऐसी विधि है जिसे इसकी प्रभावशीलता के लिए विश्व स्तर पर व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है।

लिक्विड नाइट्रोजन फ्लशिंग

ट्रेंच कटिंग

इसके अतिरिक्त, हैदराबाद में स्थित राष्ट्रीय रिमोट सेंसिंग सेंटर (एन आर एस सी) सतह की आग और संबंधित भू- धंसान की लगातार निगरानी करता है। एन आर एस सी की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक बीसीसीएल के प्रयासों से अब आग का क्षेत्र घटकर 1.80 वर्ग किलोमीटर रह गया है.

वर्ष	1971-72 कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण के समय	2021 एन आर एस सी सर्वे के अनुसार
आग का क्षेत्र (वर्ग कि. मी.)	17.32	1.80
अग्नि स्थलों की संख्या	77	27

इसके अलावा बीसीसीएल ने प्रभावित लोगों को खतरनाक क्षेत्रों से सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित करने के प्रयास किए हैं। आज तक, लगभग 2,800 परिवारों (11,000 व्यक्तियों) को बेलगड़िया में स्थापित एक सुरक्षित टाउनशिप में पुनर्स्थापित किया गया है और लगभग 4415 परिवार (17,500 व्यक्ति) को बीसीसीएल के विभिन्न टाउनशिप में पुनर्स्थापित किया गया है। बेलगड़िया टाउनशिप सड़क, पानी और बिजली की आपूर्ति, स्वच्छता सुविधाओं, स्कूलों, स्वास्थ्य केंद्रों, बाजार परिसर, डाकघर, बैंक, सामुदायिक केंद्र और श्मशान भूमि जैसे आवश्यक बुनियादी ढांचे से सुसज्जित है।

रोजगार के अवसर पैदा करने के उद्देश्य से विभिन्न पहलों के माध्यम से समुदाय के आर्थिक उत्थान की भी योजना बनाई गई है, जैसे:

कौशल विकास

सूक्ष्म उद्यमों/उत्पादन केंद्रों की स्थापना

महिलाओं के लिए आजीविका गतिविधियाँ

स्व-रोजगार के अवसर

मार्केट मैपिंग और उद्योग संलग्नता

खनन क्षेत्र में रोजगार के अवसर

इन पहलों का उद्देश्य स्थायी आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से समुदाय को सशक्त बनाना और ऐसे अवसर पैदा करना है जो स्थानीय आकांक्षाओं और बाजार की मांगों के अनुरूप हों।

झरिया मास्टर प्लान कोयले की आग, भूधंसान और पर्यावरणीय गिरावट की चुनौतियों से लंबे समय से पीड़ित समुदाय के लिए आशा की किरण के रूप में खड़ा है। व्यापक अग्निशमन रणनीतियों, प्रभावित आबादी के सुरक्षित वातावरण में पुनर्वास और सामाजिक-आर्थिक बुनियादी ढांचे के पुनरुद्धार पर ध्यान केंद्रित करके, योजना न केवल तत्काल खतरों से निपटती है बल्कि सतत विकास का मार्ग भी प्रशस्त करती है। कौशल विकास, सूक्ष्म उद्यम स्थापना और महिलाओं और स्व-रोज़गार के लिए लक्षित समर्थन जैसी पहलों के माध्यम से योजना का उद्देश्य स्थानीय आजीविका का उत्थान करना और आर्थिक लचीलापन को बढ़ावा देना है। जैसे-जैसे हितधारकों और सामुदायिक भागीदारी के मार्गदर्शन में प्रयास जारी हैं, झरिया न केवल पर्यावरणीय सुधार के लिए एक प्रमाण के रूप में उभरने के लिए तैयार है, बल्कि दुनिया भर में समान चुनौतियों का सामना करने वाले क्षेत्रों के लिए समावेशी विकास और लचीलेपन के एक मॉडल के रूप में भी उभर रहा है।

तकनीकी आलेख

कृत्रिम मेधा के दौर में हिंदी और भारतीय भाषाएं

✍ दिलीप कुमार सिंह

सत्रहवीं सदी में भाप के इंजन के आविष्कार ने औद्योगिक क्रांति की औपचारिक शुरुआत की। इस तकनीक ने विभिन्न क्षेत्रों में ऊर्जा की नींव रखी और औद्योगिक क्रांति को व्यापक विस्तार दिया। अठारहवीं सदी में प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार ने आम जनता को पुस्तकें सुलभ कराईं, जिससे ज्ञान का लोकतंत्रीकरण हुआ। उन्नीसवीं सदी में बिजली उत्पादन की तकनीक ने दुनिया को पूरी तरह बदल दिया। बीसवीं सदी में कंप्यूटर के आविष्कार ने इसकी उपयोगिता को सभी क्षेत्रों में अपरिहार्य बना दिया। यदि 21वीं सदी की बात करें, तो यह निश्चित रूप से आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, अर्थात कृत्रिम मेधा, के नाम से जानी जाएगी। इस युग में सूचनाओं का समान वितरण हुआ और सूचनाओं का लोकतंत्रीकरण संभव हो सका।

1. कृत्रिम मेधा

कृत्रिम मेधा यानि मशीन में निर्णय लेने की क्षमता उत्पन्न करना है। मशीन से इंसानी भाषा में संवाद करते हुए कार्य पूरा करना और प्रसंगानुकूल निर्णय लेना ही कृत्रिम मेधा की विशेषता है। आज कंप्यूटर मानव से उनकी स्वाभाविक भाषा में बहुत कुशलता के साथ संवाद कर रहे हैं, जिसे प्राकृतिक भाषा संसाधन कहा जाता है। कृत्रिम मेधा के पहले कंप्यूटरों को विशिष्ट कोडिंग भाषा में कुछ निर्धारित निर्देश देने होते थे, जो कोई प्रोग्रामिंग भाषा हुआ करती थी, यथा - Cobol, Visual Basic, Abap, Python आदि। इसे ही कंप्यूटर समझ सकते थे। आज कृत्रिम मेधा की सहायता से कंप्यूटर सीधे प्रयोक्ता से उसी की भाषा में बातचीत करते हुए अपेक्षित कार्य करने में समर्थ हो रहे हैं। अब कृत्रिम मेधा से आगे बढ़ते हुए सर्जनात्मक कृत्रिम मेधा (Generative AI) तक तकनीकी पहुँच चुकी है। यह हम सबके लिए अधिक उपयोगी साबित हो रही है। आज चैटजीपीटी, गूगल जेमिनी, क्लाड जैसे हजारों प्लेटफॉर्म सर्जनात्मक कृत्रिम मेधा की मदद से सीधे पाठ, वीडियो, आडियो, कोडिंग, तकनीकी आदि के सृजन का कार्य कर रहे हैं।

2. कृत्रिम मेधा बनाम सर्जनात्मक कृत्रिम मेधा

कृत्रिम मेधा विभिन्न प्रकार के मॉडल जैसे नियम-आधारित सिस्टम, डिसीजन ट्री या सरल न्यूरल नेटवर्क का उपयोग करता है और सर्जनात्मक कृत्रिम मेधा आमतौर पर जटिल न्यूरल नेटवर्क, विशेष रूप से ट्रांसफॉर्मर आर्किटेक्चर या जनरेटिव एडवर्सेरियल नेटवर्क (GANs) का उपयोग करता है।

कृत्रिम मेधा में मुख्य रूप से निर्धारित नियमों और पैटर्न का पालन किया जाता है। पूर्व निर्धारित निर्देशों के दायरे में रहकर ही कार्य होते हैं। निर्धारित नियमों और पैटर्न का पालन करने के कारण कृत्रिम मेधा से अक्सर निश्चित या अनुमानित परिणाम मिलता है। सर्जनात्मक कृत्रिम मेधा में नए विचारों और संयोजनों को उत्पन्न करने की बड़ी क्षमता है, जो कभी-कभी मानव रचनात्मकता की नकल कर सकता है, इसलिए सर्जनात्मक कृत्रिम मेधा समान इनपुट होने पर भी हर बार अलग-अलग आउटपुट दे सकता है।

सर्जनात्मक कृत्रिम मेधा लार्ज लैंग्वेज मॉडल (LLM) पर आधारित होता है। इसमें प्रसंगानुकूल सामग्री उत्पन्न करने की अद्भुत क्षमता होती है। इस अद्भुत क्षमता का उपयोग हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में सामग्री सृजित करने में किया जा रहा है।

3. भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा का विकास

इस संबंध में अगर भारत की बात की जाए, तो यहाँ पर 22 आधिकारिक भाषाएँ और 1600 से अधिक मातृभाषाएँ हैं। भारत की भाषायी विविधता हमारी भाषाओं को तो समृद्ध कर रही हैं, लेकिन इस विविधता की वजह से तमाम तरह की भाषायी बाधाएं भी उत्पन्न हो रही हैं। इस वजह से सभी भारतीयों के लिए डिजिटल समावेशन सुनिश्चित करने की चुनौती भी आती है। इस चुनौती से निपटने में कृत्रिम मेधा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। पिछले कुछ वर्षों में कृत्रिम मेधा के सहयोग से भारतीय भाषाओं का डिजिटलीकरण तेजी से हुआ है।

शुरुआती दौर में अंग्रेजी भाषा कृत्रिम मेधा के शोध और विकास के लिए प्राथमिक भाषा थी। भारत में वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव, मोबाइल और इंटरनेट की जनसाधारण की पहुँच, सस्ते डेटा प्लान की वजह से स्थानीय भाषाओं में तकनीकी युक्तियों और सामग्री की मांग बहुत तेजी से बढ़ी। इस बढ़ी हुई मांग की आपूर्ति के लिए भाषा-प्रौद्योगिकी से संबंधित नयी सुविधाओं के विकास पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया।

वर्ष 2000 के पहले तक भारतीय भाषाओं के लिए आधारभूत कृत्रिम मेधा टूल्स का विकास करने की दिशा में कार्य आरंभ हो गया था। इसमें मुख्य रूप से कंप्यूटर पर सक्षमता के साथ टाइपिंग के लिए ही सफलता मिल पायी थी। इस समय तक टाइपिंग के लिए फोनेटिक की-बोर्ड बना लिया गया था, जो कि बहुत लोकप्रिय भी हुआ था।

वर्ष 2000 से 2010 के दशक में, मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग तकनीकों के विकास के साथ, भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा अनुप्रयोगों का विकास तेज हो गया। इस दौरान, भाषा मॉडलिंग, मशीन अनुवाद और स्पीच रिकग्निशन जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। इस दिशा में गूगल और माइक्रोसॉफ्ट के प्रयास बहुत उल्लेखनीय हैं।

वर्ष 2010 के बाद आज, भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा एक परिपक्व क्षेत्र बन गया है। बड़ी तकनीकी कंपनियों से लेकर स्टार्टअप्स तक, कई संगठन इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, आईबीएम और अमेजन जैसी कंपनियां अपने प्रोडक्ट्स में भारतीय भाषाओं का समर्थन प्रदान कर रही हैं। अनुवादिनी जैसे वेबपोर्टल पर भाषा-केंद्रित कृत्रिम मेधा समाधान विकसित किए जा रहे हैं।

इसी के अंतर्गत आईआईटी मद्रास के नेतृत्व में शुरू की गयी परियोजना AI4Bharat एक अग्रणी राष्ट्रीय पहल है, जो भारत की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप कृत्रिम मेधा (AI) के विकास और अनुप्रयोग पर केंद्रित है। इसका लक्ष्य देश की सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का समाधान कृत्रिम मेधा के माध्यम से करना है। इस परियोजना की विशेषता यह है कि AI4Bharat न केवल तकनीकी नवाचार पर ध्यान केंद्रित करता है, बल्कि यह भारत की विविधतापूर्ण भाषाई और सांस्कृतिक परिदृश्य में कृत्रिम मेधा के समावेशी विकास को भी सुनिश्चित करता है।

4. हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा के प्रमुख अनुप्रयोग

कृत्रिम मेधा ने भारतीय भाषाओं के उपयोग को कंप्यूटर के विभिन्न क्षेत्रों में सुगम बनाया है। इनकी मदद से भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा की मदद से वांछित परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं-

4.1 मशीन अनुवाद :

मशीन अनुवाद कृत्रिम मेधा का एक महत्वपूर्ण अनुप्रयोग है जो भारतीय भाषाओं के बीच और भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी (और अन्य विदेशी भाषाओं) में अनुवाद को सक्षम बनाता है। आज पाठ से पाठ, पाठ से वाक, वाक से पाठ, वाक से वाक अनुवाद तत्क्षण उपलब्ध है। इस तकनीकी की मदद से आज मात्र एक भाषा जानने से दुनिया की सभी भाषाओं में व्यक्त ज्ञान को जाना जा सकता है। गूगल ट्रांसलेट, बिंग ट्रांसलेटर, अनुवादिनी, कंठस्थ और भाषिणी प्लेटफॉर्म इस क्षेत्र में उल्लेखनीय हैं। AI4Bharat परियोजना के माध्यम से भाषा-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम करने के लिए बहुत सी निःशुल्क एपीआई भी उपलब्ध करवायी गयी हैं।

इन टूल्स ने न केवल व्यक्तिगत उपयोगकर्ताओं के लिए अनुवाद को आसान बनाया है, बल्कि व्यवसायों और सरकारी एजेंसियों को भी बड़े पैमाने पर सामग्री का अनुवाद करने में मदद कर रहे हैं। बहुत सारी वेबसाइटें अब कृत्रिम मेधा-संचालित अनुवाद का उपयोग करके अपनी सामग्री को कई भारतीय भाषाओं में प्रकाशित करती हैं। इसके अलावा मशीन अनुवाद के प्लगइन ब्राउजर में लगा देने से वेब सामग्री मनचाही भाषा में प्राप्त हो जाती है।

4.2 पाठ से वाक और वाक से पाठ प्रणाली

भारत जैसे देश में, जहाँ साक्षरता दर अभी भी एक चुनौती है, वाकध्वनि-आधारित इंटरफेस महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कृत्रिम मेधा-संचालित पाठ से वाक और वाक से पाठ प्रणाली ने भारतीय भाषाओं में वाकध्वनि आधारित संप्रेषण को संभव बना दिया है।

गूगल के Gboard कीबोर्ड ऐप हिंदी सहित कई भारतीय भाषाओं में वाकध्वनि आधारित टाइपिंग की सुविधा प्रदान करता है। इसी तरह Amazon का Alexa और Google Assistant जैसे वॉयस असिस्टेंट अब हिंदी और कई अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं, जो उपयोगकर्ताओं को अपनी मातृभाषा में इन उपकरणों के साथ संप्रेषण करने की सुविधा प्रदान करते हैं।

4.3 प्राकृतिक भाषा संसाधन (NLP)

प्राकृतिक भाषा संसाधन कृत्रिम मेधा का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके माध्यम से कंप्यूटरों को मानव भाषा को समझने और इसे सृजित करने के योग्य बनाया गया है। भारतीय भाषाओं के लिए एनएलपी मॉडल्स द्वारा पाठ विश्लेषण, भावना विश्लेषण और पाठ निर्माण जैसे कार्यों को संभव बनाया गया है।

उदाहरण के लिए, अब कंपनियाँ ग्राहकों की प्रतिक्रिया का विश्लेषण करने के लिए हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में एनएलपी-आधारित भावना विश्लेषण (सेंटीमेंट एनालिसिस) टूल का उपयोग कर रही हैं। इसी तरह, न्यूज एग्रीगेटर्स भारतीय भाषाओं में समाचार लेखों को वर्गीकृत और सारांशित करने के लिए एनएलपी का उपयोग कर रहे हैं। सर्जनात्मक कृत्रिम मेधा के विकास में प्राकृतिक भाषा संसाधन का महत्वपूर्ण योगदान है।

4.4 ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (OCR)

भारतीय भाषाओं के लिए OCR सिस्टम ने पुराने दस्तावेजों और पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये सिस्टम स्कैन किए गए दस्तावेजों या फोटो से टेक्स्ट को पहचान सकते हैं और उसे संपादन योग्य डिजिटल प्रारूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

गूगल का Tesseract OCR इंजन और सीडैक का OCR टूल भारतीय भाषाओं के लिए OCR में अग्रणी हैं। इन टूल्स का उपयोग पुस्तकालयों, अभिलेखागारों और सरकारी विभागों द्वारा बड़ी मात्रा में दस्तावेजों को डिजिटाइज करने के लिए किया जा रहा है।

4.5 वर्तनी और व्याकरण जाँच

अब अंग्रेजी के समान ही हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा संचालित वर्तनी और व्याकरण जाँच किया जा सकता है। अब आटो-करेक्ट हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में भी संभव हो रहा है। इससे लेखन की गुणवत्ता में सुधार आया है। व्याकरण जाँच के माध्यम से ये टूल न केवल गलतियाँ पकड़ते हैं, बल्कि बेहतर सुझाव भी दे रहे हैं। यह टूल्स दूसरी भाषा में लिखने और दूसरी भाषा सीखने वालों के लिए बहुत ही उपयोगी हैं।

माइक्रोसॉफ्ट वर्ड और गूगल डॉक्स जैसे लोकप्रिय वर्ड प्रोसेसर अब कई भारतीय भाषाओं में वर्तनी जाँच और व्याकरण जाँच सुविधाएँ प्रदान करते हैं। इसके अलावा, ग्रामरली जैसी कंपनियां भी भारतीय भाषाओं के लिए अपने टूल विकसित कर रही हैं।

5. विशिष्ट क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा का प्रभाव

भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा के विकास से कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में कार्य की गुणवत्ता और सहजता बढ़ी है। इनमें से कुछ क्षेत्र निम्नलिखित हैं-

5.1 शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं में शिक्षा सुलभ करवाने पर विशेष चिंता व्यक्त की गयी है। कृत्रिम मेधा के विकास से भारतीय भाषाओं में शिक्षा को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाया गया है। कुछ प्रमुख अनुप्रयोग इस प्रकार हैं:

- **भाषा शिक्षण ऐप्स:** Duolingo जैसे ऐप्स अब हिंदी व अन्य भाषाओं को सीखने की सुविधा प्रदान करते हैं। इस दिशा में कई भारतीय स्टार्टअप्स अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के लिए इसी प्रकार के ऐप्स विकसित कर रहे हैं।
- **अनुवादित शैक्षिक सामग्री:** कृत्रिम मेधा-संचालित अनुवाद टूल्स का उपयोग करके पुस्तकों व अन्य सामग्री को तेजी से विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है। इससे भारत में मेडिकल और इंजिनियरिंग की शिक्षा हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से दिए जाने की शुरुआत कर दी गयी है। इस दिशा में ऑनलाइन पोर्टल अनुवादिनी के प्रयास उल्लेखनीय हैं। इस दिशा में कार्य करने के लिए राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन के अंतर्गत विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।

5.2 सरकारी सेवाएं

भारत सरकार ने नागरिकों तक सरकारी सेवाएं पहुँचाने के लिए कृत्रिम मेधा और भाषा प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने की शुरुआत की है:

- **डिजिटल सेवाएं:** MyGov पोर्टल जैसी सरकारी वेबसाइटें अब कई भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं, जिसमें कृत्रिम मेधा-संचालित अनुवाद का उपयोग किया जाता है।
- **चैटबॉट्स:** कई सरकारी विभाग अब स्थानीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा-संचालित चैटबॉट्स का उपयोग कर रहे हैं, जो नागरिकों के प्रश्नों का तत्काल उत्तर देते हैं।
- **वाक्ध्वनि आधारित सेवाएं:** कुछ राज्य सरकारें वाक्ध्वनि आधारित कृत्रिम मेधा प्रणाली का उपयोग कर रही हैं, जो नागरिकों को फोन पर अपनी स्थानीय भाषा में सरकारी सेवाओं तक पहुंच प्रदान करता है।

5.3 मीडिया और मनोरंजन

मीडिया और मनोरंजन के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा का बहुत अधिक प्रयोग किया जा रहा है। कुछ दिन पहले ही कृत्रिम मेधा निर्मित रोबोट को जी न्यूज पर समाचार पढ़ने का प्रदर्शन किया गया था। कृत्रिम मेधा ने भारतीय भाषाओं में मीडिया और मनोरंजन उद्योग को बदल दिया है:

- **सामग्री स्थानीयकरण:** तमाम अंतरराष्ट्रीय टीवी चैनल, नेटफ्लिक्स और अमेज़ॅन प्राइम जैसे स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म कृत्रिम मेधा का उपयोग करके अपनी सामग्री का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद और डबिंग कर रहे हैं।
- **समाचार एग्रीगेशन:** कृत्रिम मेधा-संचालित समाचार एग्रीगेटर विभिन्न भाषाओं से समाचार एकत्र करते हैं और उन्हें उपयोगकर्ता की पसंदीदा भाषा में प्रस्तुत करते हैं।

- **सामग्री निर्माण**: कुछ न्यूज आउटलेट्स अब स्पोर्ट्स स्कोर और स्टॉक अपडेट्स जैसी नियमित रिपोर्टें लिखने के लिए कृत्रिम मेधा का उपयोग कर रहे हैं।

5.4 व्यवसाय और वाणिज्य

कृत्रिम मेधा ने भारतीय भाषाओं में व्यापार संचालन को सरल बनाया है:

- **ग्राहक सेवा:** कई कंपनियां अब स्थानीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा-संचालित चैटबॉट्स और वॉयस असिस्टेंट का उपयोग कर रही हैं।

- **बाजार अनुसंधान:** कृत्रिम मेधा-आधारित भावना विश्लेषण (सेंटीमेंट एनालिसिस) टूल कंपनियों को विभिन्न भाषाओं में ग्राहक प्रतिक्रिया का विश्लेषण करने में मदद कर रहे हैं।

- **बाजार अनुकूलन**: कृत्रिम मेधा का उपयोग करके, कंपनियां अपने विज्ञापनों और मार्केटिंग सामग्री को विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में तेजी से अनुकूलित कर रही हैं।

6. चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ

भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में हुई प्रगति के बावजूद कुछ चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं:

1. भारत की भाषाई विविधता एक बड़ी चुनौती है। हालांकि प्रमुख भाषाओं के लिए कृत्रिम मेधा मॉडल विकसित किए गए हैं, लेकिन कई छोटी और क्षेत्रीय भाषाओं के लिए अभी भी पर्याप्त संसाधनों की कमी है।
2. डेटा की कमी कुछ भारतीय भाषाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण डिजिटल डेटा की कमी है, जो उच्च-गुणवत्ता वाले कृत्रिम मेधा मॉडल के विकास में बाधा बनती है।
3. तकनीकी चुनौतियाँ भारतीय भाषाओं की जटिल लिपि प्रणालियाँ और व्याकरण संरचनाएँ कृत्रिम मेधा मॉडल के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं।
4. डिजिटल विभाजन ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की पहुंच और डिजिटल साक्षरता की कमी कृत्रिम मेधा-आधारित भाषा टूल्स के व्यापक उपयोग में बाधा बन सकती है।

हालांकि इन चुनौतियों के बावजूद भविष्य की संभावनाएँ उज्ज्वल हैं:

- मशीन लर्निंग तकनीकों में निरंतर प्रगति के साथ, भारतीय भाषाओं के लिए और अधिक सटीक और प्राकृतिक भाषा मॉडल विकसित होने की उम्मीद है।

- भविष्य में, हम ऐसे कृत्रिम मेधा सिस्टम देख सकते हैं, जिनमें एक साथ कई भारतीय भाषाओं में काम किया जाना संभव हो सकता है। इससे भाषाओं के बीच निर्बाध संचार संभव हो सकेगा।

- भविष्य में कृत्रिम मेधा का व्यापक उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, कृषि और अन्य क्षेत्रों में बढ़ेगा। यह इन सेवाओं को स्थानीय भाषाओं में अधिक सुलभ बनाएगा।

- दुनिया भर की बहुत सी भाषाओं पर लुप्त होने का खतरा है। कृत्रिम मेधा टूल्स का उपयोग इन भाषाओं और उसकी संस्कृति के संरक्षण और प्रसार में किया जा सकता है।

7. कृत्रिम मेधा और भारतीय भाषाओं पर सामाजिक प्रभाव

कृत्रिम मेधा के भारतीय भाषाओं में प्रयोग का प्रभाव केवल तकनीकी क्षेत्र तक सीमित नहीं है। इसने समाज के विभिन्न पहलुओं को भी प्रभावित किया है:

7.1 कृत्रिम मेधा ने सामाजिक समावेशन की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा अनुप्रयोगों ने डिजिटल विभाजन को कम करने में मदद की है। अब, अंग्रेजी न जानने वाले लोग भी तकनीक का लाभ उठा सकते हैं। कृत्रिम मेधा की मदद से वे आसानी से सूचना और सेवाओं तक पहुँच रहे हैं। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में स्वस्थ लोकतंत्र के लिए यह बहुत आवश्यक है। इससे अंग्रेजी जानने वालों का अघोषित वर्चस्व तोड़ने में मदद मिलेगी।

7.2 भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा के बढ़ते प्रभाव से स्थानीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा विकास के नए रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। भाषा विशेषज्ञों, कृत्रिम मेधा डेवलपर्स, और सामग्री निर्माणकर्ताओं की मांग बढ़ी है जो स्थानीय भाषाओं में भी बहुत सारा काम कर रहे हैं।

7.3 सांस्कृतिक: संरक्षण कृत्रिम मेधा टूल्स का उपयोग भारत की समृद्ध भाषाई और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में किया जा रहा है। पुरानी पांडुलिपियों और दस्तावेजों का डिजिटलीकरण और अनुवाद इसका एक उदाहरण है।

7.4 शैक्षिक समानता: भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा-संचालित शैक्षिक सामग्री ने शिक्षा तक पहुंच को लोकतांत्रिक बनाया है। अब, छात्र अपनी मातृभाषा में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

7.5 भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा का उपयोग स्वास्थ्य जानकारी और सेवाओं को अधिक सुलभ बना सकता है। यह विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण हो सकता है, जहाँ भाषा अक्सर गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच में एक बाधा रही है।

7.6 कृषि क्षेत्र में, जो भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, कृत्रिम मेधा-संचालित भाषा टूल्स किसानों को उनकी स्थानीय भाषाओं में महत्वपूर्ण जानकारी और सलाह प्रदान कर सकते हैं। यह फसल प्रबंधन, मौसम पूर्वानुमान, और बाजार जानकारी जैसे क्षेत्रों में विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है।

8. निष्कर्ष

भारतीय भाषाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उदय वास्तव में एक नई क्रांति की शुरुआत है। यह न केवल तकनीकी प्रगति का प्रतीक है, बल्कि भारत की भाषाई विविधता को डिजिटल युग में संरक्षित करने और बढ़ावा देने का एक शक्तिशाली माध्यम भी है। अनुवाद, टाइपिंग, पत्र लेखन और रिपोर्ट तैयार करने जैसे क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा के प्रयोग ने भारतीय भाषाओं के उपयोग को सरल और व्यापक बनाया है।

हालांकि चुनौतियाँ मौजूद हैं, लेकिन भविष्य की संभावनाएँ उत्साहजनक हैं। जैसे-जैसे कृत्रिम मेधा तकनीक विकसित होती जाएगी, भारतीय भाषाओं में इसके अनुप्रयोग और भी व्यापक और प्रभावी होंगे। यह न केवल भारत के डिजिटल परिदृश्य को बदलेगा, बल्कि देश की सामाजिक-आर्थिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

अंत में, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि भारतीय भाषाओं में कृत्रिम मेधा का विकास एक सतत प्रक्रिया है। यह केवल तकनीकी विशेषज्ञों का काम नहीं है, बल्कि इसमें भाषाविदों, सांस्कृतिक विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं और समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों का सहयोग आवश्यक है। केवल एक समग्र दृष्टिकोण के माध्यम से ही हम कृत्रिम मेधा की शक्ति का उपयोग कर सकते हैं।

प्रबंधक (राजभाषा)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

उपलब्धि

बीसीसीएल ने पहली बार किया लाभांश भुगतान, वित्तीय बदलाव के साथ कंपनी नई ऊंचाइयों पर

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) ने कोलकाता में दिनांक 04 अगस्त, 2024 को अपना पहला लाभांश भुगतान समारोह आयोजित किया। यह कार्यक्रम बीसीसीएल के लिए एक ऐतिहासिक क्षण था। इस समारोह में बीसीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता ने कंपनी के बोर्ड की ओर से कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) के अध्यक्ष श्री पी एम प्रसाद को ₹44.43 करोड़ के लाभांश का औपचारिक चेक प्रदान किया।

इस समारोह में श्री मुरली कृष्ण रमैय्या - निदेशक (कार्मिक), श्री राकेश कुमार सहाय - निदेशक (वित्त), श्री संजय कुमार सिंह - निदेशक (तकनीकी) संचालन तथा कंपनी सचिव श्री बी. के. पारुई, विभागाध्यक्ष (वित्त) श्री एम के वर्मा भी इस अवसर पर उपस्थित थे। यह भी उल्लेखनीय है कि बीसीसीएल ने अपने संचित घाटे को सफलतापूर्वक पूरा कर दिया है, जो कंपनी की मजबूत वित्तीय स्थिति और रणनीतिक प्रगति को उजागर करता है।

तकनीकी आलेख

झारखण्ड की रत्नगर्भा धरती व कोयला खनिज

✍ पुलपुल झा

झारखंड भारत एक ऐसा राज्य है, जो देश में खनिज संसाधनों में महत्वपूर्ण योगदान देता है। झारखंड का कोयला क्षेत्र भारत का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है। यह राज्य आंशिक रूप से छोटानागपुर पठार और आंशिक रूप से दक्कन पठार के ऊपर स्थित है। चार कोनों से इसकी सीमा चार राज्यों से लगती है, पश्चिमी सीमा से छत्तीसगढ़, दक्षिणी सीमा से उड़ीसा, उत्तर-पश्चिमी सीमा से उत्तर प्रदेश और उत्तरी सीमा से बिहार।

एक अलग राज्य के रूप में, झारखंड ने 2000 में बिहार के दक्षिणी आधे हिस्से से अलग होकर खुद को स्थापित किया। झारखंड का शाब्दिक अर्थ है जंगल की भूमि। खनन और औद्योगिक क्षेत्र राज्य को सबसे अधिक लाभ पहुँचाते हैं, जिसमें विशाल कोयला क्षेत्र, लौह अयस्क आदि हैं।

कोयला क्षेत्र क्या है

कोयला खनिज एक तलछटी चट्टान है, जो मुख्य रूप से कार्बन का निर्माण करता है। यह देश के कोयला भंडार में बनता है। कोयला सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला किफायती खनिज संसाधन है, जिसके कई अनुप्रयोग हैं। कोयले का उपयोग थर्मल प्लांट में बिजली बनाने के लिए किया जाता है, कोकिंग कोयले का उपयोग स्टील उत्पादन में किया जाता है।

कोयला क्षेत्र वह क्षेत्र है, जहाँ कोयले की प्रचुर उपलब्धता होती है तथा सभी कोयले में समान रासायनिक सांद्रता और समान विशेषताएँ होती हैं। कोयले का निर्माण पृथ्वी के स्थलमंडल के अंदर गहराई में होता है। कोयले के निर्माण में बहुत लंबा समय लगता है क्योंकि मृत जानवरों और पौधों पर लगातार भूगर्भीय और भू-भाग के दबाव को झेलने के बाद तलछटी चट्टानों में परिवर्तित होने में लाखों-करोड़ों वर्ष लगते हैं। कोयला, कोयला खदानों से निकाला जाता है।

झारखंड में कोयला क्षेत्र

झारखंड दुनिया के सबसे बड़े खनिज समृद्ध क्षेत्रों की सूची में आता है। झारखंड का भारत के लिए महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि यह देश के कुल खनिज संसाधनों का 40 प्रतिशत और देश के कुल कोयला क्षेत्र भंडार का 29 प्रतिशत है।

झारखंड ने पूरे देश के कुल लौह अयस्क भंडार का 26 प्रतिशत और तांबा अयस्क भंडार का 19 प्रतिशत हिस्सा बनाने में योगदान दिया है। झारखंड में पाए जाने वाले कुछ अन्य महत्वपूर्ण खनिज यूरेनियम, अभ्रक, बॉक्साइट, ग्रेनाइट, चूना पत्थर, चांदी, ग्रेफाइट, मैग्नेटाइट और डोलोमाइट हैं।

खनन और खनिज निष्कर्षण इस राज्य में मौजूद प्राथमिक उद्योग हैं। झारखंड भारत का एकमात्र ऐसा राज्य है, जो कोकिंग कोल, यूरेनियम और पाइराइट का उत्पादन करता है।

रानीगंज कोयला क्षेत्र में कोयला निकालने की आधिकारिक शुरुआत 1774 में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा की गई थी। जॉन सन्मर और ग्रांट हीटली दो अंग्रेज थे, जिन्होंने इस कोयला क्षेत्र से कोयला

निकालना शुरू किया था। 1900 तक, इस राज्य से हर साल 6.2 मिलियन मीट्रिक टन कोयला निकाला जाता है। 1920 के बाद, यह संख्या बढ़कर सालाना 19 मिलियन मीट्रिक टन कोयला उत्पादन तक पहुँच गई।

झारखंड में कोयले के उत्पादन में प्रगति के लिए विश्व युद्ध और स्टीम इंजन की खोज दो मुख्य कारण थे। भारतीयों ने 1894 में ब्रिटिश एकाधिकार को चुनौती दी जब सेठ खोरा रामजी ने झरिया कोयला क्षेत्र में कोयला निष्कर्षण और उत्पादन शुरू किया। इसके बाद, धनबाद, बोकारो और झरिया में कई अन्य कोयला क्षेत्रों की खोज की गई।

भारत सरकार ने पंचवर्षीय योजनाएं शुरू कीं, जिससे कोयले के उत्पादन और निर्माण को आवश्यक बढ़ावा मिला। पहली पंचवर्षीय योजना में 33 मिलियन मीट्रिक टन का लक्ष्य हासिल किया गया। भारत सरकार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय कोयला विकास निगम (एनसीडीसी) ने भी झारखंड के कोयला क्षेत्र में कोयला उत्पादन के उचित संचालन और प्रबंधन में सहायता की।

हजारीबाग व झरिया में झारखंड राज्य का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है। झारखंड के अन्य कोयला क्षेत्र गिरिडीह, रामगढ़, करणपुरा और डाल्टनगंज हैं। भारत कोकिंग कोल लिमिटेड एवं सेंट्रल कोलफिल्डस लिमिटेड द्वारा कोयला खदानें संचालित हैं।

कोयले के प्रकार

एन्थ्रेसाइट कोयला :- एन्थ्रेसाइट कोयला खनिज कोयले का उच्चतम ग्रेड है, जिसे कोयला क्षेत्र से निकाला जा सकता है। यह सबसे अच्छी गुणवत्ता वाला कोयला होता है क्योंकि इसमें 90-95 प्रतिशत से अधिक कार्बन सामग्री होती है।

बिटुमिनस कोयला :- बिटुमिनस कोयला खनिज कोयले का दूसरा सबसे उच्च ग्रेड है। ये कोयला प्रकार भारत में मौजूद सबसे महत्वपूर्ण उपलब्ध कोयला रहा है। ओडिशा, झारखंड और पश्चिम बंगाल में अधिकांश भारतीय बिजली घरों में बिजली उत्पादन के लिए इन औसत ग्रेड के कोयले का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

लिग्नाइट कोयला :- लिग्नाइट कोयला सबसे निम्न श्रेणी का खनिज कोयला है क्योंकि इसमें कार्बन की मात्रा बहुत कम होती है। इसे जम्मू कश्मीर, राजस्थान और तमिलनाडु की कुछ खदानों के ठंडे क्षेत्रों से निकाला जाता है।

पीट कोयला :- इस प्रकार के कोयले में अन्य प्रकार के कोयले की तुलना में नमी की मात्रा उच्च और कार्बन की मात्रा निम्न होती है। पीट कोयले में कार्बन की मात्रा 40-50 फीसदी तक होती है।

निष्कर्ष

झारखंड, भारत का एक प्रमुख खनिज संपदा वाला राज्य है। यहाँ कोयला, लौह अयस्क, तांबा, बॉक्साइट, अभ्रक और यूरेनियम जैसे महत्वपूर्ण खनिज पाए जाते हैं। राज्य का लगभग 40% क्षेत्र खनिज संसाधनों से समृद्ध है। कोयला उत्पादन में झारखंड का महत्वपूर्ण योगदान है, जो देश की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करता है। लौह अयस्क और तांबा भी यहाँ प्रचुर मात्रा में मिलते हैं, जो औद्योगिक विकास में सहायक हैं। इन खनिजों का उत्खनन राज्य की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाता है और रोजगार के अवसर प्रदान करता है। झारखंड राज्य से कोयले का निर्यात और आयात किया जाता है, जिसका अर्थव्यवस्था के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

वरीय ओवरमैन, बस्ताकोला कोलियरी, क्षेत्र संख्या-09
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

तकनीकी आलेख

सुरक्षा ईश्वर से तनिक भी कम नहीं

✍ नरेश राय

कोयला खान स्वयं खतरों की खान है। इसका हर खतरा विपरीत और दुखद परिणाम देने वाला है। इस घातक और दुखद परिणाम वाले स्रोत के ज्वालामुखी को सुषुप्त करने वाला एक मात्र महामंत्र सुरक्षा है। कोयला खदानों से खून का एक कतरा बहाए बिना और मशीनों के एक–एक पुर्जे को बिना क्षति पहुचाएं उत्पादन के लिए दक्ष खनन कर्मी, खनन अभियंता, खनन विशेषज्ञ और खान सुरक्षा से जुड़े सरकारी संस्थान निरंतर कठिन परिश्रम करते हैं, परन्तु इनका परिश्रम तभी सफल होता है जब ये सुरक्षा महामंत्र को सबसे ऊपर रखते हुए खनन संबंधी छोटा से छोटा और बड़ा से बड़ा काम पूरा करते हैं।

खनन उद्योग में शून्य क्षति दक्षता प्राप्त करने के लिए कार्यरत सरकारी संस्थानों की कठोर निगरानी और खनन कंपनियों के द्वारा किये जा रहे सुरक्षा के प्रयास तभी सफल हो पाते हैं ,जब खनन कर्मी और खनन अभियंता सुरक्षा को सर्वोपरि स्थान देते हैं। बी.सी.सी.एल. में महाप्रबंधक (सुरक्षा) के नेतृत्व में खनन विशेषज्ञों की एक दक्ष टीम प्रत्येक खदान को सभी संभावित खतरों से बचाने और इसके हर छोटे से छोटे और बड़े से बड़े खनन संबंधित कामों में छुपे खतरों से बचाते हुए सुरक्षित संपन्न कराने के लिए हर क्षण प्रयासरत रहते हैं। इनके अथक प्रयास से आज बी.सी.सी.एल.के सभी खदानों के कर्मी अपने कार्य में लगने से पूर्व सुरक्षा शपथ लेते हैं और अपने अनुभवी सहकर्मी और अभियंताओं से सुरक्षा वार्ता द्वारा सुरक्षित कार्य संपन्न करने का गुरु मन्त्र को अपने मानस पटल पर स्थान देते हैं।

सुरक्षा शपथ और सुरक्षा वार्ता से कार्य प्रारम्भ कराने से कर्मियों में सुरक्षा के प्रति विशेष अनुराग और रूचि जगाने में बी.सी.सी.एल.प्रबंधन 100% सफल हो पाया है। खनन कार्य में छुपे 99.9% खतरों को दक्ष खनन अभियंता पूर्व में ही अनुमान लगा लेते हैं और इसके अनुरूप सुरक्षित कार्य करने के लिए संसद द्वारा पारित सी.एम.आर.2017 रूपी गीता उपलब्ध है और इसका अक्षरशः पालन करने के लिए महानिदेशक खान सुरक्षा अपनी अनुभवी विशेषज्ञ टीम के साथ 24x7 नजर गड़ाये रहते हैं। इनके प्रयास को 100% फलीभूत करने के लिए प्रत्येक खनन कंपनी में भी महाप्रबंधक (सुरक्षा) के नेतृत्व में अनुभवी खनन विशेषज्ञों को केवल सुरक्षा को देखने के काम में लगाया गया है, ताकि खनन कार्य के लिए निकले हर एक माँ का बेटा, हर एक विवाहिता का सुहाग और हर एक संतान का ओजस्वी पिता चुनौतियों से भरे अपने कर्तव्यों का पालन करके मुस्कुराते हुए लौटे और प्रत्येक खनन कर्मियों के परिवार में सदा खुशहाली बनी रहे।

खनन कार्य में किसी भी कर्मी को लगाने के पूर्व उनकी गहन चिकित्सीय जाँच की जाती है और इस जाँच में सफल होने के बाद उन्हें वी.टी.सी. में उसके कार्य के अनुरूप जरूरी प्रशिक्षण दिया जाता है। दुर्घटनाओं से संबंधित एक अध्ययन में देखा गया है कि खान दुर्घटनाओं के संभावित खतरों की अग्रिम सूचना हमें प्रकृति द्वारा नियर मिस (हानि रहित दुर्घटना) से देने का प्रयास और सावधान भी रहने का संकेत दे देती है। एक अनुमान के अनुसार यदि 300 नियर मिस कहीं होता है तो 30 केवल संपत्ति नुकसान वाले दुर्घटना होने की संभावना होती है। 30 केवल संपत्ति नुकसान वाली दुर्घटना कहीं होती है तो 10 मामूली इंजुरी वाली दुर्घटना होने की आशंका प्रबल हो जाती है और जब 10 मामूली इन्जुरी वाली दुर्घटना कहीं होती है तो 1 अमूल्य मानव को खोने वाली जानलेवा दुर्घटना होनी निश्चित हो जाता है। अत: कोयला खदानों में शून्य क्षति का आंकड़ा हासिल करने के लिए हमें प्रत्येक नियर मिस (हनी रहित दुर्घटना) पर पैनी नजर रखनी होती है। खदानों में घटित किसी भी नियर मिस (हानि रहित दुर्घटना) को अब रिकॉर्ड किया जाता है और गंभीरता से जाँच कर इसके स्रोत को ही समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। बी.सी.सी.एल. की किसी भी खदान में नियर मिस जैसी दुर्घटना हो, इसके लिए खदानों के सभी जोखिमों को बारीकी से देखा जाता है और इसमें जो खतरा छिपा होता है उसे दूर किया जाता है। इस रिस्क को समाप्त करने के लिए जो भी कदम उठाने की आवश्यकता होती है उस पर उचित समय पर कार्रवाई की जाती है।

बी.सी.सी.एल.के खदानों में नियर मिस (हानि रहित दुर्घटना) तक न हो, इसके लिए खनन तकनीकी के जानकर अभियंताओं द्वारा प्रत्येक खदान के लिए सेफ्टी मैनेजमेंट प्लान तैयार किया जाता है। इसमें किसी खदान में प्रत्यक्ष या परोक्ष, जितने भी खतरों का अनुमान लगाया जाता है उसके जोखिम कारकों का अध्ययन कर इसे दूर करने के बाद और खदान को पूर्ण रूप से सुरक्षित करके ही खनन कर्मियों को काम में लगाया जाता है। एक निश्चित अंतराल के बाद खदान के सेफ्टी मैनेजमेंट प्लान का सभी स्टेकहोल्डरों की उपस्थिति में पुनर्मुल्यांकन किया जाता है। इस पुनर्मुल्यांकन के दौरान किस रिस्क को कितना कम किया गया और कौन सा रिस्क पहले के अनुमान से ज्यादा हो गया, उस पर गंभीरता से विचार किया जाता है। इसमें प्रबंधन द्वारा डी.जी.एम.एस. की देखरेख में लोटो पद्धति को गंभीरता से लागू किया गया है। यह पद्धति सभी विद्युत, यांत्रिक और खनन के क्रियाकलापों पर लागू किया गया है। इस पद्धति के नहीं रहने के कारण विद्युत संबंधी फाल्ट को सुधारने के क्रम में पूर्व में कई जानलेवा दुर्घटना घटित हो चुकी है।

खनन कर्मियों की सुरक्षा को और भी पुख्ता करने के लिए इनके सभी तरह के कामों को सुरक्षित रूप से कराने के लिए एस.ओ.पी. बनाया गया है। इसे प्रत्येक संबंधित कर्मियों को व्यक्तिगत रूप से दिया भी गया है तथा कार्यस्थल पर उपलब्ध भी कराया गया है। इसको उपयोगी बनाने के लिए उस काम के अनुभवी और दक्ष विशेषज्ञों की सलाह लिया जाता है तथा समय-समय पर आवश्यक परिवर्तन भी किया जाता है। उदाहरण के लिए ओवरहेड लाइन के काम के लिए बने एक एस.ओ.पी. को नीचे दिया जा रहा है।

खनन क्षेत्र में ओवर हेड लाइन पर काम करने के लिए एसओपी (मानक संचालन प्रक्रिया)।

1. कार्य से पहले शटडाउन प्रक्रिया का सावधानी से पालन किया जाना चाहिए।
2. लाइन कनेक्शन के स्विच को लॉक किया जाना चाहिए और इसकी चाबी मरम्मत टीम द्वारा अपने पास रखनी चाहिए।
3. इस संपूर्ण कार्य की निगरानी विद्युत पर्यवेक्षक या एक सक्षम और अनुभवी व्यक्ति द्वारा की जानी चाहिए।
4. कार्य के दौरान सभी पीपीई (व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण) जैसे हाथ के दस्ताने, हेलमेट, डिस्चार्ज रॉड आदि का उपयोग किया जाना चाहिए।
5. काम शुरू करने से पहले ओवरहेड लाइन के दोनों तरफ डिस्चार्ज रॉड की मदद से डिस्चार्ज किया जाना चाहिए।
6. बारिश के दौरान ओवर हेड लाइन पर कोई काम नहीं करना चाहिए।
7. इलेक्ट्रिक पोल पर चढ़ने से पहले विद्युत पर्यवेक्षक/सक्षम व्यक्ति द्वारा उसकी मजबूती की जांच की जानी चाहिए।
8. हाथ के दस्ताने, डिस्चार्ज रॉड आदि उपयोग करने से पहले उनकी प्रभावकारिता की सावधानीपूर्वक जांच की जानी चाहिए।
9. सभी कार्य इंजीनियर की जानकारी और नियंत्रण में होने चाहिए।
10. मरम्मत टीम के वापस लौटने के बाद लाईन ऑन करनी चाहिए और मरम्मत कार्य में लगे व्यक्ति द्वारा ही स्विच को अनलॉक किया जाना चाहिए।
11. संपूर्ण कार्य को सक्षम व्यक्ति द्वारा रिकॉर्ड एवं हस्ताक्षरित किया जाना चाहिए और इसे इंजीनियर द्वारा प्रतिहस्ताक्षरित किया जाना चाहिए।

इतने प्रयासों के बाद भी खनन कर्मियों की सुरक्षा में कहीं कोई चूक न हो जाए, इसके लिए कोल इंडिया प्रबंधन और बी.सी.सी.एल. के उच्च प्रबंधन अनुभवी श्रमिकों और श्रमिक प्रतिनिधियों का सहयोग लेने के लिए कोलियरी स्तर पर पिट सेफ्टी कमिटी, क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय सुरक्षा समिति, कंपनी और कोल इण्डिया स्तर पर कॉरपोरेट सेफ्टी बोर्ड बनाया गया है। अनुभवी श्रमिकों और श्रमिक प्रतिनिधियों को इसका सदस्य बनाया गया है और एक निश्चित अन्तराल में इन सुरक्षा समितियों की नियमित बैठक आयोजित की जाती है। इन बैठकों में खान और खनन कर्मियों के सुरक्षा संबंधी जो भी महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त होते हैं, उसका कार्यान्वयन प्रबंधन करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रबंधन खनन कार्य के लिए अपने घर से निकला प्रत्येक खनन कर्मी सुरक्षित अपने घर पहुंचे, इसके लिए 24x7 अपनी पैनी नजर गड़ाये रहता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि सुरक्षा खनन कर्मियों के लिए भगवान से तनिक भी कमतर नही है।

सहायक प्रबंधक (सर्वे)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

मेरे देश की मिट्टी

तीन रंगों से बना तिरंगा, जब-जब गगन में लहराता है।
लहराकर यह तिरंगा, नील गगन में, वीरों की याद दिलाता है।
मोहब्बत बसती है, मेरे देश की मिट्टी में।
है यह शहीदों की पावन भूमि,
इस देश पर हम सभी को अभिमान है।
बसती है इंसानियत, इस सोंधी सी मिट्टी में।
हर जर्रे-जर्रे में, भारत माता का नाम है।
मोहब्बत की मिट्टी में, जरा चूम लो इसे।
इस मिट्टी में छुपा है, शहीदों का नाम।
महकती है शहादत की खुशबू, कण-कण में।
है वीरों का बलिदान छिपा है, मेरे देश की मिट्टी में।
है यह शहीदों की पावन भूमि,
इस देश पर हम सभी को अभिमान है।
बसती है, इंसानियत की खुशबू, इस सोंधी सी मिट्टी में।
नमन कर नवनीत नखरे, भारत भूमि को निसार हो।
शहादत की खुशबू से सींचा हमने इसे,
इसका गुणगान करते रहेंगे, हम सभी।
लहराता है, और तिरंगा हमेशा, झुकने न देंगे,
इस तिरंगे की शान को कभी।
वतन है हमारा, है प्राणों से प्यारा,
वतन की हिफाजत करें, हम सभी।
आ जाए बात तिरंगे की, लाज की कभी।
है अर्पित ये जीवन, है सबकुछ समर्थन,
समर्पित है तिरंगे के लिए।
अतः महकती रहे, शहादत की खुशबू,
लहराता रहे तिरंगा मेरे देश की मिट्टी में।
सलामत रहे वतन हमारा, सलामत रहे तिरंगा हमारा,
मेरे देश की मिट्टी में।

✍ ब्रजेश कुमार पाण्डेय
ई. पी. फिटर
ब्लॉक-2 क्षेत्र (वर्कशॉप)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

पूछता हूँ

पूछता हूं अक्सर ये खुद से,
काले स्याह अंधेरे को चीर कर
क्या रोशनी आएगी कभी ;
घनघोर बदली को छांट कर
क्या सूरज निकलेगा कभी ।

पूछता हूँ अक्सर ये खुद से,
वक्त के गर्म थपेड़ों को सह कर
लोहा क्या कुंदन बन पाएगा कभी
नैया, गमों के सागर को पार कर
सुख के तट तक पहुंच पाएगी कभी ।

पूछता हूँ अक्सर ये खुद से,
पतझड़ को पार कर
क्या बसंत आएगा कभी ;
जिंदगी के इन झंझावातों का
क्या जवाब ढूंढ पाएंगे कभी ।

एक जवाब आता है दिल से ,
मत हो उदास ऐ मेरे दोस्त कि
हो जाएंगे तेरे अरमान पूरे सभी
रख भरोसा तू अपने प्रभु पर
दर से उसके खाली कोई आता न कभी ।

✍ चन्दन कुमार
उप प्रबंधक
झरिया मास्टर प्लान
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

विशिष्ट तिथि - विशिष्ट अतिथि

माननीय कोयला एवं खान मंत्री का बीसीसीएल दौरा

दिनांक 25 जुलाई 2024 को माननीय केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी का बीसीसीएल धनबाद में शुभ आगमन हुआ। बीसीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता ने कंपनी के निदेशक मंडल के साथ बरवड्डा हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया। इस दौरान केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल द्वारा औपचारिक रूप से गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया गया। इस दौरान उनके साथ तत्कालीन कोयला सचिव, भारत सरकार श्री अमृत लाल मीणा और कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष श्री पी. एम. प्रसाद भी मौजूद थे। धनबाद के माननीय सांसद श्री ढूलू महतो भी संपूर्ण दौरे में उनके साथ रहे।

बीसीसीएल मुख्यालय कोयला नगर पहुंचने पर केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने सर्वप्रथम शहीद स्मारक पर कोयला शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित किया। तदुपरांत कोयला नगर स्थित पंचवटी इको-पार्क वृक्षारोपण अभियान का शुभारंभ किया। उल्लेखनीय है कि बीसीसीएल धनबाद से माननीय कोयला मंत्री जी द्वारा आरंभ किये गये वृक्षारोपण अभियान के समय कोल इंडिया की सभी अनुषंगी कंपनियों सहित कोयला मंत्रालय के अधीन अन्य कंपनियाँ वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़ी रही। लगभग 300 स्थानों पर एक साथ "एक पेड़ माँ के नाम – वृक्षारोपण" अभियान चलाया गया।

अपने दौरे के अगले चरण माननीय कोयला मंत्री जी सिजुआ क्षेत्र के झरिया मास्टर प्लान के अंतर्गत चिह्नित भू-धंसान स्थल 'सेन्द्रा बाँसजोड़ा' का जायजा लेने पहुंचे। यहाँ उन्होंने स्थानीय जनता और ग्रामीण लोगों से खुले मंच पर चर्चा की। उन्होने कहा कि हम झरिया कोलफील्ड की सदियों से चली आ रही आग और भू-धंसान की समस्या के समाधान के साथ ही साथ प्रभावित परिवार के सुरक्षित पुनर्वास के लिए प्रतिबद्ध हैं। मैं यहाँ प्रधानमंत्री जी के प्रतिनिधि के रूप में आपसे मिलने आया हूँ और आप सबके विचारों एवं सुझावों से प्रधानमंत्री जी को अवश्य अवगत कराऊंगा। हमें मिलकर एक दूसरे का सहयोग करते हुए आगे बढ़ कर इस समस्या का समाधान करना है। सभी प्रभावित परिवारों को बीसीसीएल द्वारा झरिया मास्टर प्लान के नियमानुसार सुरक्षित स्थानों पर घरों का आवंटन एवं मुआवजा दिया जाएगा। हमें एक दूसरे के सहयोग की अपेक्षा है।

दौरे के अंतिम चरण में माननीय कोयला मंत्री जी ने बेलगड़िया पुनर्वास कॉलोनी स्थित मल्टी स्किल डेवेलपमेंट केन्द्र (एम.एस.डी.आई.) पहुंचकर प्रशिक्षण प्राप्त कर रही महिला अभ्यर्थियों से मुलाकात की। उन्होंने यहां निवास कर रहे लोगों से वार्ता की। इसके बाद वे झरिया मास्टर प्लान के तहत बीसीसीएल परिवारों के पुनर्वास के लिए विकसित कर्माटांड़ कॉलोनी में गये और वहां के मकानों का निरीक्षण किया तथा निवास कर रहे कर्मियों का हाल-चाल भी जाना।

विशिष्ट तिथि - विशिष्ट अतिथि

माननीय कोयला एवं खान राज्य मंत्री का बीसीसीएल दौरा

भारत सरकार के माननीय कोयला एवं खान राज्य मंत्री, श्री सतीश चन्द्र दुबे दिनांक 08 सितंबर, 2024 को बीसीसीएल दौरे पर धनबाद पहुंचे। धनबाद आगमन पर कंपनी के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता ने संपूर्ण निदेशक मंडल के साथ उनका स्वागत किया। इस अवसर पर कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष श्री पी. एम. प्रसाद भी उपस्थित रहे। बीसीसीएल आगमन पर सर्वप्रथम उन्होंने कोयला नगर स्थित शहीद स्मारक पहुँचकर शहीदों को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। कोयला नगर में सीआईएसएफ द्वार गॉर्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इसके पश्चात उन्होंने बीसीसीएल पर्यावरण विभाग द्वारा विकसित पंचवटी इको-पार्क में वृक्षारोपण किया। वृक्षारोपण के समय धनबाद के माननीय विधायक श्री राज सिन्हा भी मौजूद रहे।

दौरे के अगले चरण में माननीय कोयला एवं खान राज्यमंत्री बीसीसीएल द्वारा सीएसआर के तहत राजकीयकृत भागीरथ ब्रह्मचारी उच्च विद्यालय में स्थापित की गयी लघु विज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। इस दौरान उनके साथ टुंडी के माननीय विधायक श्री मथुरा प्रसाद महतो भी उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि बीसीसीएल द्वारा विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग एवं गणित को बढ़ावा देने की सरकार की एक विशेष पहल के तहत कंपनी सीएसआर के माध्यम से धनबाद धनबाद के 05 सरकारी स्कूलों में ₹ 22.96 लाख रुपये की लागत से "मिनी साइंस लैब (STEM – Science, Technology, Engineering, Mathematics)" स्थापित की हैं।

इसके बाद माननीय मंत्री जी अग्नि एवं भू-धंसान प्रभावित क्षेत्र का दौरा करने के लिए सेंद्रा बाँसजोड़ा पहुँचे और यहाँ उपस्थित ग्रामीणों और स्थानीय निवासियों से संवाद करते हुए उन्हें आश्वासन दिया कि शीघ्र ही अग्नि एवं भू-धंसान की समस्या से निजात मिल जाएगी। सरकार इस दिशा में तेजी से कार्य कर रही है। माननीय कोयला एवं खान राज्यमंत्री ने बीसीसीएल मुनीडीह भूमिगत खदान के अंदर जाकर कोयला उत्पादन और पंप आदि की कार्य प्रणाली का भी जायजा लिया। उन्होंने अग्नि-प्रभावित एना परियोजना पहुँचकर आग के बीच कोयला खनन को भी देखा। उन्होंने मुनीडीह और एना में बेहतर कार्य करने वाली महिला कर्मियों को शील्ड और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया।

दौरे के अगले चरण में पुनः कोयला नगर पहुँचकर उन्होने बीसीसीएल द्वारा बेलगड़िया टाउनशिप में विशेष रूप से महिलाओं के लिए संचालित 'फैशनप्रेन्योर' कौशल-विकास कार्यक्रम के द्वितीय बैच का शुभारंभ किया। उल्लेखनीय है कि झरिया पुनर्वास कॉलोनी बेलगड़िया में राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) के सहयोग से संचालित केन्द्र, बेलगड़िया के अलावा दो अन्य केंद्र आरंभ होने वाले हैं। इस दौरान प्रशिक्षण प्राप्त कर रहीं छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्होने कहा कि महिला सशक्तिकरण भारत सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। इस दिशा में बीसीसीएल का यह प्रयास सराहनीय है।

इसके बाद उन्होंने घोषणा करते हुए कहा कि बीसीसीएल शीघ्र ही धनबाद और आसपास के ग्रामीण अंचल के लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए एक्स-रे, ईसीजी और सेमी-ऑटो एनालाइज़र मशीनों से सुसज्जित 02 मोबाइल मेडिकल वैन प्रदान करने जा रहा है। इसके अलावा, बेलगड़िया पुनर्वास कॉलोनी के निवासियों के 02 वातानुकूलित इलेक्ट्रिक बसें भी उपलब्ध करायी जाएगी।

दौरे के अंतिम चरण में कोयला भवन मुख्यालय में बीसीसीएल प्रबंधन, सभी क्षेत्रीय महाप्रबंधकों और कोयला भवन मुख्यालय के विभागाध्यक्षों के साथ एक संक्षिप्त समीक्षा बैठक भी की। बैठक में उन्होने बीसीसीएल के कार्यों की सराहना की।

पर्यावरण विमर्श

हरित प्रौद्योगिकी

✍ प्रीति कुमारी

हरित प्रौद्योगिकी, जिसे इको-फ्रेंडली टेक्नोलॉजी के रूप में भी जाना जाता है- ऐसी टेक्नोलॉजी है जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना या कम से कम नुकसान पहुंचाते हुए, मानव की जरूरतों को पूरा करती है। हरित प्रौद्योगिकी नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करती है, प्रदूषण को कम करती है और प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करती है।

हरित प्रौद्योगिकी (Green Technology) कई कारणों से महत्वपूर्ण है :

- सबसे पहले, यह हमें जीवाश्म (fossil) ईंधन से दूर जाने और जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मदद कर सकती है।
- दूसरा, यह हमें प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए उन्हें सुरक्षित रखने में मदद कर सकती है।
- तीसरा, यह हमें स्वच्छ हवा और पानी प्रदान करने में मदद कर सकती है और एक स्वस्थ ग्रह बनाने में हमारी मदद कर सकती है।

हरित प्रौद्योगिकी के प्रकार

- **नवीकरणीय (Renewable energy)**: नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत जैसे कि सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, और जलविद्युत ऊर्जा की ओर बदलाव के साथ हरित प्रौद्योगिकी ने ऊर्जा परिदृश्य में क्रांति ला दी है और पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करते हैं। ये स्रोत स्वच्छ और अटूट ऊर्जा आपूर्ति प्रदान करते हैं, जीवाश्म (fossil) ईंधन पर निर्भरता कम करते हैं और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करते हैं।
- **ऊर्जा दक्षता (Energy Efficiency)**: ऊर्जा दक्षता वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम कम ऊर्जा का उपयोग करके समान कार्य कर सकते हैं। ऊर्जा दक्षता बढ़ाने के तरीकों में शामिल हैं- इमारतों को बेहतर ढंग से इंसुलेट (insulating) करना, ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग करना और सार्वजनिक (Public)परिवहन या कार पूलिंग का उपयोग करना। स्मार्ट ग्रिड, एलईडी लाइटिंग और ऊर्जा-कुशल उपकरण समग्र ऊर्जा खपत को कम करने में योगदान करते हैं, जिससे कार्बन फुटप्रिंट कम होते हैं।
- **अपशिष्ट प्रबंधन (Waste Management)**: रिसाइक्लिंग और अपशिष्ट ऊर्जा प्रौद्योगिकियों सहित सतत अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाएं हरित पहल के महत्वपूर्ण घटक हैं। सामग्रियों का पुन: उपयोग कर और कचरे को ऊर्जा में परिवर्तित करके हम लैंडफिल उपयोग को कम कर सकते हैं और एक चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकते हैं।
- **परिवहन (Transportation)** : इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की शुरूआत और ईंधन दक्षता में प्रगति के साथ परिवहन क्षेत्र एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। ये प्रौद्योगिकियां वायु प्रदूषण को कम करने और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने में योगदान देती हैं।
- **स्मार्ट एग्रीकल्चर (Smart Agriculture)**: सटीक खेती और IoT प्रौद्योगिकियाँ कृषि पद्धतियों को बढ़ाती हैं, टिकाऊ खेती के तरीकों को बढ़ावा देती हैं। मिट्टी के स्वास्थ्य की निगरानी, पानी के उपयोग को अनुकूलित करना और डेटा- संचालित अंतर्दृष्टि का उपयोग पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए पैदावार बढ़ाने में योगदान देता है।
- **हरित भवन डिज़ाइन (Green Building Design)** : सतत वास्तुकला और हरित भवन प्रथाएं ऊर्जा दक्षता, जल संरक्षण और पर्यावरण- अनुकूल सामग्रियों के उपयोग को प्राथमिकता देती हैं। यह न केवल निर्माण के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करता है बल्कि स्वस्थ और

अधिक आरामदायक रहने की जगह भी बनाता है।

- **प्रदूषण नियंत्रण (Pollution Control)**: प्रदूषण नियंत्रण तकनीकों का उपयोग हवा, पानी और मिट्टी के प्रदूषण को कम करने के लिए किया जाता है। प्रदूषण नियंत्रण तकनीकों में शामिल हैं स्क्रबर्स (Scrubbers), फिल्टर (Filter) और पुनर्चक्रण (Recycling)।
- **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण:** प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तकनीकों का उपयोग जल, वन, और खनिज जैसे प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को कम करने और उनका रिसाइक्लिंग करने के लिए किया जाता है।

हरित प्रौद्योगिकी (Green Technology) का उपयोग

हरित प्रौद्योगिकी का अपने घर और व्यवसाय में कई तरह से उपयोग कर सकते हैं :

- **घर:** आप अपने घर में ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं, जैसे कि एलईडी बल्ब, ऊर्जा-कुशल रेफ्रिजरेटर और वाशिंग मशीन। आप अपने घर को बेहतर ढंग से इन्सुलेट भी कर सकते हैं और अपनी छत पर सौर पैनल लगा सकते हैं।
- **व्यवसाय:** आप अपने व्यवसाय में एनर्जी इफिशिएंट उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं, अपने कार्यालय को बेहतर ढंग से इन्सुलेट कर सकते हैं और अपने व्यवसाय के लिए नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग कर सकते हैं। आप अपने कर्मचारियों को पुनर्चक्रण (recycle) करने और ऊर्जा बचाने के लिए प्रोत्साहित भी कर सकते हैं।

हरित प्रौद्योगिकी (Green Technology) **के कुछ उदाहरण**

- **सौर ऊर्जा:** सौर ऊर्जा एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है जो सूर्य के प्रकाश का उपयोग बिजली उत्पन्न करने के लिए करती है। सोलर पैनल सूर्य के प्रकाश को सीधे बिजली में परिवर्तित करते हैं और सौर ऊर्जा को अब दुनिया भर में बिजली उत्पादन के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है।
- **पवन ऊर्जा:** पवन ऊर्जा एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है जो हवा की गति का उपयोग बिजली उत्पन्न करने के लिए करती है। पवन की ऊर्जा का उपयोग ब्लेड को घुमाने के लिए करते हैं, जो एक जनरेटर को चलाता है और बिजली उत्पन्न करता है। पवन ऊर्जा को अब दुनिया भर में बिजली उत्पादन के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है।
- **जल विद्युत:** जल विद्युत एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है जो पानी की गति का उपयोग बिजली उत्पन्न करने के लिए करती है। जल विद्युत बांध नदियों और जलप्रपातों पर बनाए जाते हैं, और पानी की गति टरबाईन को घुमाती है, जो एक जनरेटर को चलाता है और बिजली उत्पन्न करता है। जलविद्युत को अब दुनिया भर में बिजली उत्पादन के एक प्रमुख स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है।
- **ऊर्जा-कुशल उपकरण:** ऊर्जा-कुशल उपकरण ऐसे उपकरण हैं जो कम ऊर्जा का उपयोग करते हैं। इन उपकरणों में फ्रिज, वाशिंग मशीन, डिशवाशर और एलईडी बल्ब (LED Bulb) शामिल हैं। ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग करके, आप अपने बिजली के बिलों पर बचत कर सकते हैं और पर्यावरण की मदद कर सकते हैं।
- **इलेक्ट्रिक वाहन:** इलेक्ट्रिक वाहन ऐसे वाहन हैं जो बिजली पर चलते हैं। इलेक्ट्रिक वाहन गैस या डीजल से चलने वाले वाहनों की तुलना में कम प्रदूषण पैदा करते हैं। इलेक्ट्रिक वाहन का उपयोग करके आप पर्यावरण की मदद कर सकते हैं और अपने ईंधन खर्च पर बचत कर सकते हैं।
- **जैविक खाद:** जैविक खाद एक प्राकृतिक खाद है जो पौधों और जानवरों के अवशेषों से बनाई जाती है। जैविक खाद मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है और पौधों के विकास को बढ़ावा देती है। जैविक खाद का उपयोग करके आप रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम कर सकते हैं और पर्यावरण की मदद कर सकते हैं।

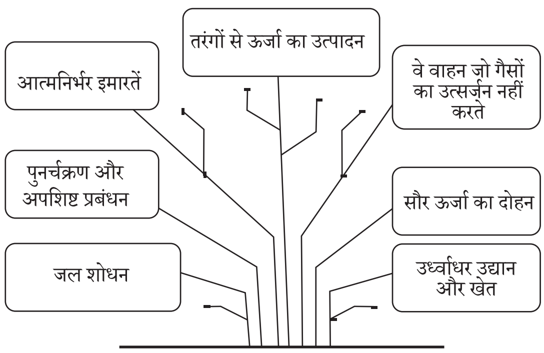

चित्र: हरित प्रौद्योगिक के उदहारण

हरित प्रौद्योगिकी के लाभ

- **पर्यावरणीय लाभ: हरित प्रौद्योगिकी** प्रदूषण को कम करती है और प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करती है। यह जलवायु परिवर्तन से लड़ने में भी मदद करती है।
- **आर्थिक लाभ**: हरित प्रौद्योगिकी नई नौकरियां पैदा कर सकती है और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकती है। यह ऊर्जा लागत को भी कम कर सकती है, जो व्यवसायों और उपभोक्ताओं दोनों के लिए लाभदायक है।
- **सामाजिक लाभ**: हरित प्रौद्योगिकी सभी के लिए एक स्वस्थ और अधिक सतत भविष्य सुनिश्चित करने में मदद कर सकती है। यह गरीबी को कम करने और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में भी मदद कर सकती है।
- **स्वास्थ्य लाभ:** हरित प्रौद्योगिकी प्रदूषण को कम करके और स्वच्छ ऊर्जा प्रदान करके लोगों के स्वास्थ्य में सुधार कर सकती है।

हरित प्रौद्योगिकी का भविष्य

- हरित प्रौद्योगिकी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। जैसे-जैसे दुनिया जलवायु परिवर्तन और अन्य पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रही है, हरित प्रौद्योगिकी अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। सरकारें, व्यवसाय और उपभोक्ता सभी हरित प्रौद्योगिकी में निवेश कर रहे हैं।
- भविष्य में, हरित प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन जाएगी। हम अपने घरों, कार्यालयों और परिवहन प्रणालियों में हरित प्रौद्योगिकी का उपयोग करेंगे। हम हरित प्रौद्योगिकी का उपयोग भोजन, कपड़े और अन्य वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए भी करेंगे।
- हरित प्रौद्योगिकी हमारे भविष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह हमें एक स्वस्थ और अधिक सतत भविष्य बनाने में मदद कर सकती है।
- हरित प्रौद्योगिकी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। हर साल, नई हरित प्रौद्योगिकी विकसित की जा रही हैं और हरित प्रौद्योगिकी सस्ती और अधिक सुलभ होती जा रही है। भविष्य में, हरित प्रौद्योगिकी ऊर्जा उत्पादन, परिवहन और कृषि सहित कई उद्योगों में क्रांति लाएगी।

हरित प्रौद्योगिकी में निवेश

भारत ने COP-26 में जलवायु कार्रवाई के लिये महत्त्वपूर्ण प्रतिबद्धताएँ की हैं। इनमें वर्ष 2030 तक अपनी ऊर्जा आवश्यकता का 50% अक्षय ऊर्जा के माध्यम से पूरा करना और अपनी गैर-जीवाश्म ईंधन ऊर्जा क्षमता को 500 GW तक लाना शामिल है। इसके लिये हरित प्रौद्योगिकियों में भारी निवेश की आवश्यकता होगी और बड़े कॉर्पोरेट इस कार्य के लिये कमर कस रहे हैं। वर्ष 2000 के बाद से सौर और पवन ऊर्जा की कीमतों में 90% से अधिक की गिरावट आई है, जबकि केवल मामूली सब्सिडी द्वारा इन क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया गया है। हालांकि सौर और पवन ऊर्जा निरंतरता में नहीं प्राप्त होती है। अतः 24 घंटे बिजली सुनिश्चित करने हेतु उनके सस्ते भंडारण की आवश्यकता है।

- वाणिज्यिक लाभप्रदता के आधार पर कुछ दशकों में नई बैटरी और नवीकरणीय ऊर्जा दुनिया को शक्ति प्रदान करने के लिये तैयार हैं। ई-मोबिलिटी को लेकर भारत का दृष्टिकोण है कि वर्ष 2030 तक सभी वाणिज्यिक कारों का 70 प्रतिशत, निजी कारों का 30 प्रतिशत, बसों का 40 प्रतिशत, दोपहिया और तिपहिया वाहनों की 80 प्रतिशत बिक्री इलेक्ट्रिक वाहनों की होगी। 100 मिलियन से अधिक इलेक्ट्रिक वाहन और इसके लिये लगभग 12.5 लाख करोड़ रुपए के निवेश की आवश्यकता होगी।
- हाइड्रोजन भी ऊर्जा के एक महत्त्वपूर्ण स्रोत के रूप में उभर रहा है क्योंकि इसमें शून्य कार्बन उत्सर्जन होता है और यह 75-85 प्रतिशत तक ऊर्जा का एक गैर-प्रदूषणकारी स्रोत है। हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था में आगे बढ़ने से भारत न केवल तेल, कोयले और प्राकृतिक गैस के आयात को कम कर सकता है बल्कि यूरोप और एशिया के अन्य देशों में हाइड्रोजन निर्यात करने में भी सक्षम होगा।

हरित ऊर्जा

- हरित ऊर्जा अक्षय ऊर्जा स्रोतों एवं शून्य उत्सर्जन स्रोतों से प्राप्त होती है, जिससे वातावरण प्रदूषित नहीं होता है। साथ ही इसके अंतर्गत ऊर्जा दक्षता उपायों द्वारा बचत की गई ऊर्जा भी आती है।
- स्वच्छ ऊर्जा उन स्रोतों से प्राप्त ऊर्जा है जिनमें कुछ हद तक वायु प्रदूषक शामिल होते हैं, जबकि हरित ऊर्जा प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त ऊर्जा है।

स्वच्छ ऊर्जा और हरित या नवीकरणीय ऊर्जा

- स्रोतों के बीच कुछ समानता हैं लेकिन वे बिल्कुल समान नहीं हैं।
- सही मायने में स्वच्छ ऊर्जा हरित ऊर्जा एवं अक्षय ऊर्जा से मिलकर बनती है।

  स्वच्छ ऊर्जा स्रोत

  - सौर ऊर्जा
  - पवन ऊर्जा
  - जलीय ऊर्जा
  - भू-तापीय उर्जा
  - बायोमास

- स्वच्छ ऊर्जा नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों, जैसे कार्बन डाइऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों को उत्सर्जित किये बिना बिजली का उत्पादन करती है। पवन ऊर्जा, जलीय ऊर्जा और सौर ऊर्जा सहित स्वच्छ ऊर्जा नवीकरणीय भी है।

निष्कर्ष

हरित प्रौद्योगिकी एक स्थायी भविष्य के लिए आशा की किरण है। विभिन्न क्षेत्रों में इसका एकीकरण न केवल पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करता है बल्कि आर्थिक अवसर भी प्रस्तुत करता है। हरित प्रथाओं को अपनाना सिर्फ एक विकल्प नहीं है अपितु भावी पीढ़ियों के लिए हमारे ग्रह की सुरक्षा करना एक जिम्मेदारी है। हरित प्रौद्योगिकी हमें स्वच्छ सुरक्षित और स्थायी भविष्य की दिशा मे अग्रसर कर रही है| इसका अध्ययन और अनुसंधान हमें नये समाधानों और समृद्धि की दिशा मे एक नया मार्ग प्रदान कर रहा है।

अतः कहा जा सकता है कि यदि भारत को COP-26 में की हुई प्रतिबद्धताओं को पूरा करना है तो उसे बहुत जल्द कार्बन आधारित ऊर्जा से नवीकरणीय ऊर्जा आधारित अर्थव्यवस्था की तरफ बढ़ना होगा। इसके लिये उसे पर्याप्त वित्त एवं प्रौद्योगिकी की आवश्यकता होगी जिसके लिये सरकार एवं निजी क्षेत्रों के साथ ही वैश्विक स्तर पर निवेशकों को भी साथ लाना होगा।

सूचना प्रौद्योगिकी (नवोन्मेष) विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

समसामयिक चर्चा

आत्म-ध्वंसन (Self-Sabotage)

✍ डॉ. एस. सी. प्रसाद

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति करने का लक्ष्य रखता है लेकिन दुर्भाग्यवश उसका सामना कुछ ऐसी परिस्थिति से हो जाता है जब स्वयं वह अपने ही विकास को बाधित करने लगता है। दूसरे शब्दों में कहें तो वह अपने आप से ही लड़ने लगता है। तब इस तरह की स्थिति को हम आत्म-ध्वंसन(Self-Sabotage)की संज्ञा देते हैं। आत्म-ध्वंसन की स्थिति व्यक्ति के जीवन में तब आती है जब उसके जीवन में दो विरोधाभासी आकांक्षाएं एक साथ उपस्थित और क्रियाशील हों- पहली चेतन और दूसरी अचेतन या अवचेतन। व्यक्ति भली-भांति जानता है कि वह जीवन में कैसे आगे बढ़ना चाहता है। लेकिन फिर भी, कुछ कारणवश ठिठक जाता है, आगे नहीं बढ़ पाता है। वस्तुत: तब वह विश्लेषणात्मक-गतिहीनता (Analysis-Paralysis) की स्थिति का सामना कर रहा होता है।

ऐसी स्थिति में वह व्यक्ति अपने काम में लापरवाही बरतता है, प्रोत्साहन की कमी महसूस करता है और अपनी ही क्षमता पर उसका विश्वास कम होने लगता है। वह अपने ही विकास और लक्ष्य-प्राप्ति के मार्ग में अनायास ही बाधा डालना शुरू कर देता है। व्यक्ति के द्वारा किए गए इस तरह के असंगत व्यवहार तब उसके हित के विपरीत परिणाम देने लगते हैं। व्यक्ति के वैसे असंगत व्यवहार जो उसके अपने ही विकास और कल्याण के विपरीत हों तो वे उसके आत्म-ध्वंसन की स्थिति की ओर इशारा करते हुए नजर आते हैं।

संसार के किसी भी भूक्षेत्र में यह समस्या किसी भी आयु वर्ग के व्यक्ति के जीवन में आ सकती है। लेकिन यह समस्या तब गंभीर हो जाती है जब इसका शिकार कोई युवा व्यक्ति हो जाता है। युवावस्था में व्यक्ति का अनुभव काफी कच्चा होता है। उसके पास ऊर्जा बहुत ही अधिक होती है जिसके अनियंत्रित होने की संभावना अन्य आयु वर्ग के लोगों की तुलना में ज्यादा होती है। कुछ कर गुजरने के सपने मन में पलते रहते हैं। लेकिन जब आत्म-ध्वंसन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो परिस्थिति अति गंभीर हो जाती है। सपनों का संसार धूमिल होने लगता है। वह बिखरने सा लगता है। आशा निराशा में बदलने लगती है। आत्मविश्वास क्षीण होने लगता है। उसका मन हीन भावना से ग्रसित होने लगता है। वह अपनी तुलना किसी दूसरे व्यक्ति से करने लगता है, वह भी हीन भावना से ग्रसित होकर। धीरे-धीरे उस व्यक्ति की अंतर्शक्ति और आत्मविश्वास पर कमजोरी का आवरण चढ़ने लगता है। वह ऐसे–ऐसे काम शुरू कर देता है जो उसके हित में नहीं होते हैं।

बड़े शैक्षणिक संस्थानों खासकर तकनीकी संस्थान जैसे आई आई टी, एन आई टी,मेडिकल कॉलेज और अन्य प्रबंधन संस्थान सरीखे अन्य संस्थानों से आये दिन खबरें आती रहती हैं कि फलां विद्यार्थी ने खुदकशी कर ली या किसी ने खुदकशी करने की कोशिश की। यह विषय विद्यार्थी के अभिभावकों के लिए जितना चिंताजनक है उतना ही बड़े शिक्षा संस्थानों के प्रबंधन के लिए भी है। बुद्धिजीवी वर्ग के लिए तो यह एक अति सोचनीय विषय है। चिंतन और चर्चा के बाद एक बात सामने आते नजर आती है कि ऐसी घटनाओं के पीछे प्राय: सेल्फ–सैबोटेज (आत्म–विनाश या आत्म-ध्वंसन) एक महत्वपूर्ण कारण है, इसलिए ज्वलंत समस्या से लैस यह एक सारगर्भित विषय है जिस पर चर्चा और उसका विश्लेषण होना उचित जान पड़ता है। इसमें सजग बुद्धिजीवियों और नीति निर्धारण करने वाले सक्षम व्यक्तियों की सहभागिता जरूरी है।

वस्तुत:, यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है। वर्तमान समाज में विभिन्न आयु वर्ग के लोगों को यह समस्या घुन की तरह अपनी जद में समेटे जा रही है। तनाव भरे और खासकर अनेकानेक नित नई समस्याओं से जूझते हुए युवा वर्ग के लिए आत्म-ध्वंसन एक विकराल समस्या का रूप ले रहा है और उनके जीवन को अभिशप्त कर रहा है।

वैसे इस समस्या का जन्म कोई आधुनिक काल में हुआ है, ऐसा नहीं है। इसकी झलक पौराणिक कथानकों में भी हम देख सकते हैं। इस संदर्भ में महाभारत के पात्र दुर्योधन की दुर्बुद्धि और रामायण के महान खलनायक रावण के कृत्य पर भी विचार किया जा सकता है। यदि दुर्योधन ने द्रौपदी के चीर और शील-हरण का असफल प्रयास करके अपने विनाश को आमंत्रित न कर लिया होता और भरी सभा में उसने यदि द्रौपदी को अपनी जंघा पर बिठाने की जिद न किया होता, तो शायद भीम का जीवन हरण प्रहार उसकी जंघा पर ही नहीं होता। विदित है कि गांधारी के वरदान से उसका पूरा शरीर पाषाण हो चुका था- केवल जंघा छोड़कर, फिर भी वह अपना जीवन उस प्रहार

से नहीं बचा सका। दुर्योधन के द्वारा किया गया यह अपकृत्य एक सेल्फ-सैबोटेज़ के उदाहरण की श्रेणी में आ सकता है जो उसके खुद के हित में नहीं था। तीनों लोकों में अपनी शक्ति और ज्ञान का डंका बजाने वाले रावण ने भी यदि सीता का हरण नहीं किया होता तो लगभग अमरत्व प्राप्त किया हुआ वह महाबलशाली असमय ही मृत्यु को प्राप्त न हुआ होता। रावण द्वारा किया गया उसका यह अपकृत्य भी आत्म-ध्वंसन या आत्म–विनाश के एक उदाहरण की श्रेणी में ही आता नजर आ रहा है।

आधुनिक काल में भी इतिहास रचने से पहले अब्राहम लिंकन, फ्रेड रोजर्स, माइकेल एंजेलो, जॉन एफ कैनेडी और जॉर्ज वाशिंगटन सभी ने आत्म-ध्वंसन के किसी न किसी पहलू का अनुभव किया था।(लीडेम, 2017)

उपर्युक्त विवेचना से इस संदर्भ शब्द के प्रति जनमानस का जागरूक होना स्वाभाविक है । तो चलिए, जानते हैं कि आखिर आत्म-ध्वंसन होता क्या है? जब कोई व्यक्ति अन्तर्मन से अपने अंतरतम स्तर पर उठनेवाली आवश्यकता की पूर्ति न करके वास्तविक जगत और आसन्न जरूरत से पलायन करते हुए कोई दूसरा व्यवहार करने लगता है- यह सोचकर कि अंतरतम स्तर पर उठी हुई चुनौती को पूरा करने में वह सक्षम नहीं है, तब ऐसी असंगत स्थिति को आत्म-ध्वंसन कहते हैं।

मनोविज्ञानी ब्रेनर के शब्दों में "आत्म-ध्वंसन की स्थिति तब होती है जब कोई व्यक्ति खुद को शारीरिक, मानसिक या भावनात्मक रूप से नष्ट कर देता है, या जानबूझकर व्यक्तिगत लक्ष्यों और मूल्यों को कमजोर करके अपनी सफलता और भलाई के मार्ग में स्वयं ही बाधा डालता है।(Brenner, 2019)

आत्म-ध्वंसन को एक सरल उदाहरण के द्वारा इस प्रकार से समझने का प्रयास करते हैं – मान लिया कोई बच्चा स्कूल जाना शुरू करता है और पहले ही दिन किसी कारणवश अपने स्कूल में कहीं गिर जाता है और उसके सिर में जोर से चोट लग जाती है। वह बच्चा अंदर से डरकर एक ऐसी धारणा बना लेता है कि अगर वह स्कूल जाएगा तो फिर से उसे चोट लग जाएगी। अपनी इस कल्पित धारणा के कारण वह स्कूल नहीं जाने का बहाना ढूंढने लगता है। चरम स्थिति तो तब आ जाती है जब स्कूल नहीं जाने के लिए वह बेहोश तक होने लगता है। बच्चा का अंतर्मन इस बात को जानता है कि स्कूल जाने में ही उसकी भलाई है, फिर भी स्कूल जाने से वह भागने का प्रयास करता है। यह स्थिति आत्म-ध्वंसन की ही एक स्थिति है।

आत्म-ध्वंसन की स्थिति में यह जानते हुए कि जिस काम को कोई व्यक्ति कर रहा है या करने जा रहा है वह उसके हित में नहीं है, फिर भी उस काम को वह करता है। सरल रूप में आत्म-ध्वंसन को समझने के लिए ऊपर वर्णित प्रसंग एक उदाहरण मात्र है। ऐसे अनेकानेक उदाहरण आप देख सकते हैं जहां इस असंगत स्थिति के कारण व्यक्ति वैसे-वैसे काम करता है जो उसके अपने ही विकास में बाधा पहुंचाते हैं और विपरीत परिणाम देते हैं।

अब आते हैं, उन विद्यार्थियों की स्थिति पर जिसकी पराकाष्ठा खुदकशी की स्थिति तक पहुंच जाती है। सबसे मुश्किल है कि आत्म-ध्वंसन की प्रक्रिया इतने सहज रूप में होती है कि दूसरा व्यक्ति इसे समझे तब तक बहुत देर हो गई होती है। अच्छे संस्थानों में पहुंचने के लिए बच्चों को बहुत अधिक; या यों कहें कि एक गलघोंटू प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। जो भी हो, वे इन उच्च संस्थानों में प्रवेश पा भी जाते हैं। लेकिन संस्थान की पारिस्थितिकी (Ecosystem) में किसी विद्यार्थी के साथ कुछ ऐसी घटनाएँ घट जाती हैं जिसके कारण वह अपने सामने आनेवाली चुनौतियों का सामना किन्हीं कारणों से नहीं कर पाता है। बस यहीं से शुरू होता है- एक विपथगमन, जो अंतत: आत्म-ध्वंसन की स्थिति में परिणत हो जाता है। उदाहरण के लिए मान लिया जाए कि विद्यार्थी अपने कॉलेज में अपने वर्ग में जाता है जहां शिक्षक या किसी सहपाठी के व्यवहार से उसका अन्तर्मन आहत हो जाता है। जैसे कोई शिक्षक उस विद्यार्थी को किसी अन्य सहपाठी खासकर विपरीत लिंग के सहपाठी के सामने पढ़ाई या किसी अन्य विषय के संदर्भ में उसे लज्जित कर देता हैं जिसको वह सह नहीं पाता है। वह मनोवैज्ञानिक रूप से आहत हो जाता है, जिसका पता किसी को नहीं चलता है सिवाय उस विद्यार्थी के। अब वह विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों की तुलना में अपने आप को कम आँकने लगता है और धीरे-धीरे हीन भावना का शिकार होने लगता है। उसकी मानसिक ऊर्जा का एक बड़ा भाग इस हीन भावना का सामना करने में खर्च होने लगता है। उसमें चुनौतियों से भागने की प्रवृति पनपने लगती है। वह जीवन की मुख्य धारा से धीरे-धीरे हटने लगता है। वह वैसे काम करने लगता है जिसमें उसकी भलाई नहीं हो। दूसरे शब्दों में यों कहें कि तब वह अपने–आप से ही लड़ने लगता है। अपनी समस्या में वह किसी को शामिल भी नहीं करता है। इस प्रकार अपने विकास में वह स्वयं ही बाधक बनने लगता है जो आत्म-ध्वंसन का एक प्रतिरूपण (Embodiment) मात्र होता है। वह अपने साथ ही छद्म व्यवहार करने लगता है। इस प्रकार वह अपनी ही प्रगति और स्वास्थ्य आदि के मामले में स्वयं ही बाधक बनने लगता है।

जिस पारिस्थितिकी (Ecosystem) में हम रहते हैं वह अनेक तरह के तनावों से भरा रहता है, खासकर आधुनिक वातावरण में, जिनका सामना हर व्यक्ति को करना पड़ता है। इन तनावों के प्रति

हमारे चेतन, अचेतन या अवचेतन पसंद पर आधारित हमारा अनुकूलन (Coping) होने लगता है, जो हमारे व्यवहार पर नियंत्रण बढ़ाता है या हमें मनोवैज्ञानिक आराम प्रदान करता है– उसे सहन-तंत्र(Coping Mechanism) कहते हैं । मनोविज्ञान की दृष्टि से आत्म-ध्वंसन भी एक तरह का सहन-तंत्र होता है जिसे हमारा मन विकसित कर लेता है और फिर हमारा व्यवहार उस तंत्र से निर्देशित होने लगता है।

आत्म-ध्वंसन के शिकार किसी व्यक्ति के ऊपर जब हीनभावना से ग्रसित होने का मनोवैज्ञानिक दबाब पड़ता है तब अपने आपको वह विश्लेषणात्मक-गतिहीनता (Analysis-Paralysis) की स्थिति में पाता है। ऐसी स्थिति में उसके सामने प्राय: दो विकल्प उभरकर आते हैं –संघर्ष (Fight) या पलायन (Flight) का। दोनों में से एक को चुनना उसकी मजबूरी हो जाती है। यदि उसका मन परिस्थिति से पलायन को चुन लेता है तो उसकी अंतिम परिणति होती है- बचाव प्रविधि (Survival mode) का स्वीकरण और वहीं से शुरू हो जाती है विनाशकारी आत्म-ध्वंसन की घटना। व्यक्ति के विचार और व्यवहार में सहज रूप से परिवर्तन शुरू हो जाते हैं जिसका आभास शायद उसे भी नहीं हो पाता है और वह एक अनजान रास्ते पर चल पड़ता है। उस अनिर्देशित रास्ते पर चलते हुए वह वैसे-वैसे काम करने लगता है जो उसके विकास में बाधक होते हैं। ऐसी परिस्थिति में उसका चेतन मन तो उसे वास्तविक परिस्थिति का साक्षात्कार कराता है लेकिन वह उससे दूर होने का प्रयास करने लगता है। उसका अवचेतन मन उसे एक वैसा मार्ग चुनने के लिए प्रोत्साहित करता है जिसके तहत वह वैसे ही काम करने लगता है जो उसके विकास में बाधक हो और उसे वास्तविक परिस्थिति से दूर ले जाए। यह आत्म-ध्वंसन की स्थिति होती है जिसमें वह अपने आप से लड़ने लगता है। ऐसी स्थिति की उत्पति में आसन्न अवसाद से भरी पारिस्थितिकी का भी सहयोग रहता है। घोर अवसाद की अंतिम परिणति व्यक्ति को जीवन की सच्चाई से दूर करती है और कभी–कभी यह स्थिति खुदकुशी की ओर प्रेरित करती है। ऐसी ही स्थिति में बच्चे अपने संस्थान और घर को छोड़कर कहीं और ही अनजान रास्ते पर निकल पड़ते हैं जो एक अत्यंत ही विनाशकारी कदम होता है– जिसका परिणाम बहुत ही खतरनाक, या यूं कहें कि कुछ भी हो सकता है, जिसमें कल्पना से बाहर होने की सारी संभावनाएं वर्तमान रहती हैं।

आत्म-ध्वंसन (Self-Sabotage) के संभावित मुख्य कारणों में इस समस्या से जूझ रहे व्यक्ति की नकारात्मक आत्मछवि और कम आत्मसम्मान सामने नजर आते हैं। ये अक्सर स्वार्थ, भय, स्वीकृति की लालसा, आत्मसंयम, आत्म अपेक्षा और संतुष्टि की कमी के कारण सामने आते हैं।

व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक उच्च आकांक्षाओं से लैस वर्तमान के इस दौर में व्यक्ति और खासकर युवा वर्ग जाने-अनजाने इस समस्या का शिकार हो रहे हैं। यह एक विकट समस्या है और सामाजिक चिंता का एक विषय भी। न जाने कितनी मासूम जिंदगियां इस भयावह और आभासी दीखनेवाली परन्तु वास्तविक समस्या का शिकार होकर अपने लक्ष्य और अपनों से बिछड़कर गुमनामी के अंधेरे में खो रहीं हैं, इसलिए हर सजग और अनुभवी व्यक्ति खासकर मां-बाप और शिक्षक की जिम्मेदारी बनती है कि बच्चों और खासकर युवा वर्ग के किशोर लोगों की भावनाओं को समझने का प्रयास करें। हो सकता है आपका कोई बच्चा या किशोर भी इस समस्या से गुजर रहा हो जिसका आभास आपको नहीं हो। सतर्कता के साथ धैर्यपूर्वक यदि मां-बाप, अभिभावक और शिक्षक समय पर इस समस्या का आभास करके उचित कदम उठा लें तो संभवतः इस समस्या से गुजर रहे व्यक्तियों को नई जिंदगी और नये हितकारी रास्ते मिल सकते हैं। उन्हें गुमनामी की अतल गहराई में डूबने से बचाया जा सकता है। इस सार्थक सामाजिक पहल से परिवार, समाज, देश और विश्व की धरोहर युवा-पीढ़ी को एक अनजान खतरे से बचाने में सफलता मिलने की पूरी गुंजाइश नजर आती है। जरूरत है तो बस एक सम्मिलित प्रभावी प्रयास की। लेखक के विचार में ऐसी सार्थक पहल में भागीदारी निभाना हम सबका नैतिक और सामाजिक दायित्व है।

सेवानिवृत मुख्य प्रबंधक (उत्खनन)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

समसामयिक चर्चा

ओलंपिक खेलों में भारत

अभिषेक डे

ओलंपिक खेल विश्व का सबसे बड़ा और प्रतिष्ठित खेल आयोजन है, जो प्राचीन यूनान की परंपरा से प्रेरित है। आधुनिक ओलंपिक की शुरुआत 1896 में हुई और तब से यह हर चार साल पर आयोजित किया जाता है। यह खेलों का एक अंतरराष्ट्रीय महोत्सव है, जहां दुनिया भर के एथलीट अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हुए विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। ओलंपिक का उद्देश्य खेल के माध्यम से एक शांतिपूर्ण और बेहतर विश्व का निर्माण करना है। यह न केवल शारीरिक प्रतिस्पर्धा का प्रतीक है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय सद्भाव, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और मानवीय उत्कृष्टता का भी प्रतीक है।

ओलंपिक खेलों में भारत की भागीदारी एक रोमांचक कहानी है, जो उतार-चढ़ाव, चुनौतियों और उपलब्धियों से भरी हुई है। इस आलेख में हम भारत की ओलंपिक यात्रा पर एक विस्तृत नज़र डालेंगे, इसके इतिहास से लेकर वर्तमान स्थिति तक।

प्रारंभिक वर्ष और पहली भागीदारी

भारत ने पहली बार 1900 के पेरिस ओलंपिक में हिस्सा लिया, जब नॉर्मन प्रिचार्ड ने व्यक्तिगत रूप से दो रजत पदक जीते। हालांकि, यह भागीदारी अनौपचारिक थी क्योंकि भारत तब ब्रिटिश शासन के अधीन था। भारत की पहली आधिकारिक भागीदारी 1920 के एंटवर्प ओलंपिक में हुई, जहां छह एथलीटों ने देश का प्रतिनिधित्व किया।

स्वर्णिम युग: हॉकी में वर्चस्व

1928 से 1956 तक का समय भारतीय ओलंपिक इतिहास का स्वर्णिम युग माना जाता है। इस अवधि में भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने लगातार छह स्वर्ण पदक जीते, जो एक अद्वितीय उपलब्धि है। इस दौरान ध्यानचंद जैसे महान खिलाड़ियों ने भारतीय हॉकी को विश्व स्तर पर एक नई पहचान दी।

1928 एम्स्टर्डम से 1956 मेलबर्न तक की यात्रा

1. **1928 एम्स्टर्डम**: भारत ने अपना पहला स्वर्ण पदक जीता, जहां टीम ने सभी मैचों में अपने प्रतिद्वंद्वियों को हराया और फाइनल में नीदरलैंड्स को 3-0 से परास्त किया।
2. **1932 लॉस एंजिल्स**: भारत ने अपनी श्रेष्ठता बरकरार रखते हुए फाइनल में जापान को 11-1 से हराकर दूसरा स्वर्ण पदक जीता।
3. **1936 बर्लिन**: इस ओलंपिक में ध्यानचंद के नेतृत्व में भारत ने फाइनल में जर्मनी को 8-1 से हराकर तीसरा स्वर्ण पदक हासिल किया।
4. **1948 लंदन**: द्वितीय विश्व युद्ध के कारण 12 साल के अंतराल के बाद, भारत ने अपनी विरासत को आगे बढ़ाते हुए चौथा स्वर्ण पदक जीता।
5. **1952 हेलसिंकी**: बलबीर सिंह सीनियर के शानदार प्रदर्शन के साथ भारत ने पांचवां स्वर्ण पदक अपने नाम किया।
6. **1956 मेलबर्न**: भारत ने अपना छठा लगातार स्वर्ण पदक जीतकर अपने वर्चस्व को और मजबूत किया।

इस युग में कई महान खिलाड़ियों ने भारतीय हॉकी को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। ध्यानचंद, जिन्हें 'हॉकी के जादूगर' के नाम से जाना जाता है, ने अपने असाधारण कौशल से दुनिया को मंत्रमुग्ध कर दिया। बलबीर सिंह सीनियर, लेस्ली क्लॉडियस, और रूप सिंह जैसे खिलाड़ियों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस स्वर्णिम युग ने न केवल भारतीय हॉकी को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित किया, बल्कि पूरे देश में खेल के प्रति जुनून और गर्व की भावना भी जगाई। यह समय भारतीय खेल इतिहास में एक ऐसा अध्याय है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

1960 के दशक से भारत के ओलंपिक प्रदर्शन में गिरावट आई। हॉकी में वर्चस्व कमजोर पड़ने लगा और अन्य खेलों में भी उल्लेखनीय सफलता नहीं मिली। इस दौर में कई कारण रहे, जिनमें खेल संस्कृति का अभाव, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा और सरकारी समर्थन की कमी प्रमुख थे।

1980 के मास्को ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम ने आखिरी बार स्वर्ण पदक जीता। इसके बाद लंबे समय तक भारत को व्यक्तिगत खेलों में ही सफलता मिली। 1996 में लिएंडर पेस ने टेनिस में कांस्य पदक जीता, जो एक नए युग की शुरुआत थी।

21वीं सदी: नई उम्मीदें और उपलब्धियां

21वीं सदी में भारत के ओलंपिक प्रदर्शन में धीरे-धीरे सुधार देखा गया:

1. **2008 बीजिंग ओलंपिक**: अभिनव बिंद्रा ने शूटिंग में भारत का पहला व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीता।
2. **2012 लंदन ओलंपिक**: भारत ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए छह पदक जीते।

3. **2016 रियो ओलंपिक**: पी.वी. सिंधु ने बैडमिंटन में रजत और साक्षी मलिक ने कुश्ती में कांस्य पदक जीता।
4. **2020 टोक्यो ओलंपिक** : (2021 में आयोजित): नीरज चोपड़ा ने भाला फेंक में स्वर्ण पदक जीतकर एथलेटिक्स में भारत का खाता खोला। इस ओलंपिक में भारत को कुल 7 पदक प्राप्त हुए।
5. **2024 के पेरिस ओलंपिक :** वर्ष 2024 के पेरिस ओलंपिक में भारत ने कुल छह पदक जीते, जिसमें एक रजत और पाँच कांस्य पदक शामिल हैं। यह भारत का तीसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था, जिसमें नीरज चोपड़ा ने भाला फेंक में रजत पदक जीता। मनु भाकर ने शूटिंग में दो कांस्य पदक जीतकर इतिहास रचा। इसके अलावा, भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने कांस्य पदक जीता। हालांकि, कई एथलीट चौथे स्थान पर रहकर पदक से चूक गए। इस प्रदर्शन ने भारत के खेलों में निरंतर सुधार और खेलों में निवेश की आवश्यकता को उजागर किया।

वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाएं

वर्तमान में भारत ओलंपिक खेलों में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए कई प्रयास कर रहा है:

1. **खेलो इंडिया कार्यक्रम**: युवा प्रतिभाओं की पहचान और विकास के लिए।
2. **टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम** (TOPS): उच्च संभावना वाले एथलीटों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए।
3. **निजी क्षेत्र की भागीदारी**: कई कॉरपोरेट घरानों द्वारा एथलीटों को प्रायोजित किया जा रहा है।
4. **बेहतर बुनियादी ढांचा**: देश भर में उच्च स्तरीय प्रशिक्षण सुविधाओं का विकास।

चुनौतियां और आगे का रास्ता

भारत के सामने अभी भी कई चुनौतियां हैं:

1. बुनियादी स्तर पर खेल संस्कृति का विकास।
2. कम लोकप्रिय खेलों के लिए समर्थन बढ़ाना।
3. खेल प्रशासन में सुधार और पारदर्शिता लाना।

निष्कर्ष

भारत की ओलंपिक यात्रा उतार-चढ़ाव से भरी रही है, लेकिन हाल के वर्षों में देश ने उल्लेखनीय प्रगति की है। नए प्रतिभाशाली खिलाड़ियों का उदय, बेहतर बुनियादी ढांचा और सरकारी समर्थन भविष्य के लिए आशाजनक संकेत हैं। यदि भारत अपने विशाल जनसांख्यिकीय लाभांश का सही उपयोग कर सके और खेल संस्कृति को बढ़ावा दे सके, तो आने वाले ओलंपिक खेलों में देश का प्रदर्शन और भी बेहतर हो सकता है।

भारत की ओलंपिक यात्रा एक प्रेरणादायक कहानी है जो दर्शाती है कि दृढ़ संकल्प, कड़ी मेहनत और राष्ट्रीय समर्थन के साथ कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। जैसे-जैसे भारत एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है, उम्मीद है कि इसकी खेल उपलब्धियां भी इसकी आर्थिक और सामाजिक प्रगति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलेंगी।

लिपिक, भुगतान विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

कामगार महिला

एकता की राह पर चली वो,
काम की भागीदार बनी वो।
सपनों की ऊँचाइयों को छूने को,
कदम एक के बाद एक बढ़ाती वो।

सृजनात्मकता से सजी उनकी यह धरती,
परिवर्तन की ओर बढ़ती वो।
काम करने की राह में विश्वासी,
महिलाओं की शक्ति को जानती वो।

सृष्टि करती वो नई दुनिया,
कर्तव्यों का पालन करती वो।
समर्पित उनकी लड़ाई बेमानी के ख़िलाफ़,
विजय की ओर बढ़ती वो।

काम करती वो अनवरत,
महिलाओं की मान्यता का संघर्ष करती वो।
समर्पित वो अपने काम में,
समाज को सुधारने की राह दिखाती वो।

काम करती महिलाएं हैं समृद्ध,
समाज में उनका स्थान अभिवृद्ध हो।
जो सपनों को पाने की राह को चुनती,
समर्पण और निर्भय हमनाम वे हों।

✍ सुहानी सागर
प्रबंधन प्रशिक्षु (कार्मिक), कतरास क्षेत्र
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

स्वास्थ्य चर्चा

अनमोल कुंदरू

✍ प्रणव ओझा

प्रकृति एवं आयुर्वेद ने मनुष्यों के लिए कई सारे उपहार दिए हैं। इन अनमोल रत्नों में से एक है, कुंदरू। कुंदरू सब्जी के रूप में कई बार हमारी थाली का हिस्सा बना होगा। कुंदरू एक हरी सब्जी है, इसका वानस्पतिक नाम *Coccinia indica* है तथा यह भारतीय उपमहाद्वीप में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। परवल के आधे दाम में मिलने और परवल जैसा दिखने वाला कुंदरू अपने आप में ढेर सारे आयुर्वेदिक गुणों की खान है। आइये, हम आयुर्वेद की दृष्टि से कुंदरू का अध्ययन करते हैं।

आयुर्वेद में कुंदरू को बिम्बी के नाम से जाना जाता है। चूंकि पकने पर इसका फल तोते की चोंच के समान लाल हो जाता है, इसलिए तुण्डिका के नाम से भी इसका वर्णन मिलता है। आयुर्वेद की पुस्तक "कैयदैव निघण्टु" में औषधिवर्ग के अन्तर्गत अधिकरण सूत्र संख्या 581 से 587, कुंदरू के गुणों से भरा हुआ है।

बिम्बी स्वाद्वी रसे पाके वामन्यश्लेष्मला जयेत्।
रक्तपित्तक्षयश्वासपाण्डुश्वयथुकामलाः ।।
- 583, अधिकरण सूत्र, कैयदैव निघण्टु

आइए, हम कुंदरू को अपने आहार में शामिल करने के कुछ अद्भुत फायदों के बारे में विस्तार से जानते हैं:-

1. पोषक तत्वों से भरपूर

कुंदरू पोषक तत्वों का एक उत्कृष्ट स्रोत है। इसमें विटामिन ए, विटामिन सी, विटामिन बी6, और फोलिक एसिड जैसे महत्वपूर्ण विटामिन होते हैं। इसके अलावा, इसमें कैल्शियम, पोटेशियम, मैग्नीशियम, और फॉस्फोरस जैसे खनिज भी होते हैं। ये सभी पोषक तत्व हमारे शरीर के समुचित विकास और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होते हैं। विटामिन ए और सी एंटी ऑक्सिडेंट के रूप में कार्य करते हैं, जो शरीर को फ्री रेडिकल्स से होने वाले नुकसान से बचाते हैं।

2. वज़न कम करने में मदद करता है

जो लोग वज़न कम करने या उसे नियंत्रित करने की कोशिश कर रहे हैं, उनके लिए कुंदरू एक आदर्श सब्जी है। इसमें कैलोरी की मात्रा कम होती है और फाइबर की मात्रा अधिक होती है। फाइबर युक्त आहार पाचन प्रक्रिया को धीमा कर देता है, जिससे पेट लंबे समय तक भरा रहता है और भूख कम लगती है। यह ज्यादा खाने की आदत को रोकने में मदद करता है और वज़न कम करने में सहायक होता है।

3. रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) के स्तर को नियंत्रित करता है

कुंदरू उन लोगों के लिए बहुत फायदेमंद हो सकता है जिन्हें मधुमेह है या जो अपने रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित रखना चाहते हैं। कुंदरू का ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है, जिसका मतलब है कि इसे खाने से रक्त शर्करा का स्तर धीरे-धीरे बढ़ता है। इसके अलावा, इसमें मौजूद फाइबर पाचन प्रक्रिया को धीमा करता है, जिससे शर्करा का अवशोषण धीमा हो जाता है और रक्त शर्करा के स्तर में अचानक वृद्धि नहीं होती है। मधुमेह में कुंदरू की पत्तियों तथा जड़ के रस के सेवन से ज्यादा लाभ मिलता है।

4. हृदय की रक्षा करता है

कुंदरू में पोटेशियम की अच्छी मात्रा होती है, जो रक्तचाप को नियंत्रित करने में सहायक होता है। उच्च रक्तचाप हृदय रोगों का एक प्रमुख कारण है, और पोटेशियम की पर्याप्त मात्रा शरीर में सोडियम के प्रभाव को संतुलित करने में मदद करती है। इसके अलावा, कुंदरू में पाए जाने वाले एंटीऑक्सिडेंट्स हृदय को फ्री रेडिकल्स के नुकसान से बचाते हैं, जिससे दिल की बीमारियों का खतरा कम होता है।

5. पाचन स्वास्थ्य को बढ़ाता है

कुंदरू का उच्च फाइबर कंटेंट पाचन तंत्र के लिए अत्यंत लाभकारी है। फाइबर मल को नरम बनाने और उसकी मात्रा बढ़ाने में मदद करता है, जिससे कब्ज की समस्या कम होती है। इसके अलावा,

फाइबर आंतों में अच्छे बैक्टीरिया के विकास को बढ़ाता है, जो पाचन स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक होते हैं। नियमित रूप से कुंदरू का सेवन करने से पाचन से संबंधित समस्याएं कम हो सकती हैं।

6. रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है

कुंदरू में विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जो हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विटामिन सी एक शक्तिशाली एंटीऑक्सिडेंट है जो शरीर को संक्रमणों से लड़ने और रोगों से बचाने में मदद करता है। इसके अलावा, विटामिन सी आयरन के अवशोषण को भी बढ़ावा देता है, जो एनीमिया जैसी समस्याओं को कम करने में सहायक होता है।

7. त्वचा और बालों के लिए फायदेमंद

विटामिन ए और सी के कारण कुंदरू त्वचा और बालों के स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता है। यह त्वचा को चमकदार और बालों को मजबूत बनाता है।

8. सूजन में लाभ

कुंदरू की पत्तियों को गर्म कर सूजन पर बाँध देने से सूजन घट जाती है।

9. एंटीसेप्टिक के रूप में उपयोग

कुंदरू की पत्तियों के रस को खुले घाव पर लगाने से **एंटीसेप्टिक** का कार्य करती है।

10. सर्दी, खाँसी में लाभ

सर्दी, खाँसी तथा सांस के फूलने पर कुंदरू के फलों के रस का 15 मिलीलीटर की मात्रा में सेवन करने से लाभ मिलता है।

उप प्रबंधक (कार्मिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

इच्छा

इच्छा क्या है – हर्ष है उल्लास है।
इच्छा हमारे मन का आत्म विश्वास है।
इच्छा है तो मानव जीवन की आस है।
इच्छा पतझड़ के बाद बसंत का आभास है।

इच्छा प्रारंभ का प्रकाश भी है।
इच्छा मन के अभिलाषा का उल्लास भी है।
इच्छा हमारे प्रयत्न की प्रथम शुरुआत भी है।
इच्छा ब्रह्माण्ड के आस्तित्व का आभास भी है।

इच्छा सूखे हुए जमीन में वर्षा की आस है।
इच्छा चिड़िया की चोंच में दबे
तिनके के घोसले की आस है।

इच्छा नन्हे की कागज की कश्ती से
नदी पार करने की आस है।
इच्छा मां की डांट के बाद ममता की बरसात का
आभास है।

इंसान मजबूर है अपनी इच्छाओं के सामने क्योंकि-
इच्छा मन को भ्रमित करने का औजार भी है।
इच्छा कलियुग के अस्तित्व का आधार भी है।
इच्छा काल भी, विकराल भी और
विनाश का पर्याय भी।

✍ संतोष कुमार सिन्हा
उप प्रबंधक (कार्मिक), बरोरा क्षेत्र
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

स्वास्थ्य-चर्चा

आपका सच्चा जीवनसाथी

अमित कुमार चटर्जी

जीवनसाथी का मतलब होता है वह व्यक्ति जिसके साथ हम जीवन भर का सफर तय करते हैं, जो हमेशा हमारे साथ होता है, हमारे संग खुशियों और दु:खों में हमारे साथ होते हैं। आमतौर पर लोग अपने जीवनसाथी को अपने पति, पत्नी, दोस्त, साथी या संबंधित व्यक्ति के रूप में जानते हैं जो उनके साथ उनके जीवन का आधार होते हैं। आपका असली जीवनसाथी - आपका शरीर है।

आप और आपका शरीर जन्म से लेकर मृत्यु तक एक साथ रहते हैं। आपका शरीर आपकी संपत्ति है, जो कोई और साझा नहीं कर सकता। एक बार जब आपका शरीर जवाब देना बंद कर देता है तो कोई भी आपके साथ नहीं होता है। जितना अधिक आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखेंगे, स्वास्थ्य उतना ही आपका साथ निभाएगा। अपना ख्याल रखिए, हमेशा फिट रहिए।

एक प्रसिद्ध कहावत है **'स्वास्थ्य ही धन है'** का अर्थ बहुत ही सामान्य और सरल है। इसका अर्थ है कि हमारा अच्छा स्वास्थ्य ही हमारी वास्तविक संपत्ति है, जो हमें अच्छा स्वास्थ्य और मन देता है और हमें जीवन के सभी गुणों का सामना करने में सक्षम बनाता है। अच्छा स्वास्थ्य अच्छे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। मैं इस कहावत से पूरी तरह सहमत हूं कि स्वास्थ्य ही वास्तविक धन है, क्योंकि यह हर समय हमारी मदद करता है।

इस तरह के व्यस्त जीवन और भागदौड़ वाले वातावरण में सभी के लिए अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखना और स्वस्थ जीवन जीना बहुत कठिन है। स्वस्थ रहने के लिए नियमित देखभाल और उचित खानपान की आवश्यकता होती है।

अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सभी के लिए एक संपत्ति है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है। स्वस्थ मन हमें उत्तम जीवन शैली की ओर ले जाएगा।

"याद रखें कि आपका शरीर एकमात्र स्थायी पता है जहां आप रहते हैं।

आपका शरीर आपकी ज़िम्मेदारी है, इसलिए आप हैं इसके असली जीवनसाथी।"

इंसान का अपना सगा उसका स्वस्थ शरीर होता है जो उसका अंत तक साथ देता है इसलिए उसका ध्यान रखें और स्वस्थ रखें। शरीर को लेकर एक जाने माने विद्वान **Wendy Goodall McDonald M D (Author)** ने इस पर किताब लिखी है, **" My body my temple " मेरा शरीर ही मेरा मंदिर है।**

पैसा, रिश्तेदार और दोस्त कोई भी स्थायी नहीं है, सब आते हैं और चले जाते हैं। लेकिन कोई भी आपके अलावा आपके शरीर की मदद नहीं कर सकता है।

आप रोज करें:-

- प्राणायाम - फेफड़ों के लिए
- ध्यान - मन के लिए
- योग-आसन - शरीर के लिए
- चलना - दिल के लिए
- अच्छा भोजन - आंतों के लिए
- अच्छे विचार - आत्मा के लिए
- अच्छे कर्म - दुनिया के लिए,

इसलिए स्वस्थ रहिए, फिट रहिए और प्रसन्न रहिए।

करो योग, रहो निरोग

बोर्ड सचिवालय (मुख्यालय)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

स्वास्थ्य-चर्चा

उत्तम जीवनशैली का महत्व

✍ भाव्या शक्ति

आज के तेजी से बदलते हुए विश्व में, जीवनशैली का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। प्रौद्योगिकी के इस युग में, जब हम 24X7 इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया से जुड़े हुए हैं, जीवनशैली को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह न केवल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि हमारे मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव डालती है।

स्वस्थ जीवनशैली की पहली और सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है- संतुलित आहार। यह जरूरी है कि हम अपने भोजन में उचित मात्रा में विटामिन, खनिज, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और वसा शामिल करें। आजकल फास्ट फूड और जंक फूड का चलन बढ़ गया है; जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम ताजे फल, सब्जियाँ और साबुत अनाज का सेवन करें। इसके अलावा पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमारे शरीर को हाइड्रेट रखता है और विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है।

व्यायाम हमारी जीवनशैली का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा है। नियमित व्यायाम न केवल हमें शारीरिक रूप से फिट रखता है, बल्कि यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देता है। विभिन्न प्रकार के व्यायाम जैसे योग, ध्यान, दौड़ना, साइकिल चलाना और जिम में वर्कआउट करने से हम तनाव को कम कर सकते हैं और अपने मूड को बेहतर बना सकते हैं। व्यायाम से हमारा रक्त संचार बेहतर होता है, हृदय स्वस्थ रहता है और हम ऊर्जावान महसूस करते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी जीवनशैली का एक महत्वपूर्ण पहलू है। आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याएँ आम हो गई हैं। हमें अपने मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए समय-समय पर ब्रेक लेना चाहिए और उन गतिविधियों में शामिल होना चाहिए जो हमें खुशी और संतोष प्रदान करती हैं। योग और ध्यान जैसी तकनीकें हमारे मन को शांत रखने में मदद करती हैं और हमें स्वीकृति की भावना विकसित करने में सहायता करती है।

सामाजिक संपर्क और सामुदायिक जीवन का भी जीवनशैली में महत्वपूर्ण योगदान है। हम सामाजिक प्राणी हैं और हमारे लिए दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताना महत्वपूर्ण है। सामाजिक संपर्क से हमें मानसिक संतुलन मिलता है और हम अकेलापन महसूस नहीं करते। इसके अलावा सामुदायिक गतिविधियों में शामिल होना हमें समाज के प्रति जिम्मेदारी का अनुभव कराता है और हम समाज के विभिन्न पहलुओं को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं।

आज के डिजिटल युग में, हमें अपनी डिजिटल जीवनशैली का भी ध्यान रखना चाहिए। अत्यधिक समय तक स्क्रीन के सामने बैठने से हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। डिजिटल डिटॉक्स के माध्यम से हम समय- समय पर अपने आप को डिजिटल उपकरणों से दूर रख सकते हैं और वास्तविक जीवन में समय बिता सकते हैं। इससे हमारी आंख की सेहत भी बनी रहती है और हमें मानसिक शांति मिलती है।

जीवनशैली का एक और महत्वपूर्ण पहलू है- पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी। हमें यह समझना चाहिए कि हमारे छोटे-छोटे कार्य जैसे प्लास्टिक का उपयोग कम करना, पानी की बचत करना और ऊर्जा की खपत को नियंत्रित करना पर्यावरण को संरक्षित करने में मदद कर सकते हैं। एक पर्यावरण- मैत्रीपूर्ण जीवनशैली न केवल हमारी धरती को बचाने में मदद करती है, बल्कि हमें एक स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण में जीने का मौका भी देती है।

आत्म- विकास और शिक्षा का भी जीवनशैली में महत्वपूर्ण योगदान है। हमें निरंतर सीखने और अपने ज्ञान को बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। नई-नई चीजों को सीखने से हम अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल हो सकते हैं। आत्म-विकास के माध्यम से हम अपने आत्म-सम्मान को बढ़ा सकते हैं और जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं।

जीवन शैली का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है - संतुलित जीवन। हमें अपने काम, परिवार और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए। अत्यधिक काम के दबाव से बचने के लिए हमें समय-समय पर विश्राम और मनोरंजन की आवश्यकता होती है। संतुलित जीवन जीने से हम न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ रहते हैं, बल्कि मानसिक रूप से भी संतुलित रहते हैं।

आज के समय में, जीवनशैली का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। एक स्वस्थ, संतुलित और सकारात्मक जीवनशैली हमें शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक रूप से मजबूत बना सकती है। स्वस्थ आहार, नियमित व्यायाम,मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान, सामाजिक संपर्क, डिजिटल डिटॉक्स, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी, आत्म-विकास से हम अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं। इस प्रकार उत्तम जीवनशैली का महत्त्व समझना और इसे अपनाना आज के समय की जरूरत बन गया है।

कर्मचारी स्थापना विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

कहानी

बालकनी

✍ पीयुष रंजन

शिवली हाट बाजार, गोलिया जिले के मुख्य बाजारों में शामिल था। वहाँ आस-पास के कई गाँव से लोग जीविकोपार्जन करने के लिये तरह-तरह की छोटी बड़ी दुकानें लगाया करते थे। उन दुकानों में फल, सब्जियाँ, मसाले, और तरह-तरह के हस्तशिल्प, घरेलु राशन के सामान इत्यादि बिकते थे। बाजार के बीचों-बीच गुजरती एक सड़क उसे दो हिस्सों में बाँट देती थी। सड़क के दोनों ओर दुकानदार अपने सामान को बड़े करीने से सजाए बैठे रहते थे। सड़क के एक ओर एक दो मंजिला मकान था, जिसकी बालकनी सड़क की ओर खुलती थी। इस बालकनी की रेलिंग से टिककर समर रोज़ की तरह उस बाज़ार में अपनी नज़रे दौड़ा रहा है। उसकी नज़र पहले मिठाई की दुकान की तरफ़ जाती है, जहां गुलाब जामुन, रसगुल्ले और जलेबी की मिठास हवा में घुल रही है। हलवाई अपने हुनर का प्रदर्शन करते हुए गरमागरम जलेबियाँ बना रहा है, और बच्चों की लंबी कतार दुकान के सामने लगी हुई है। वहां से थोड़ी आगे एक फेरीवाला रंग-बिरंगे खिलौनों के साथ खड़ा है। उसके पास लकड़ी के बने खिलौने, पतंगें, और रबर की गेंदें हैं। बच्चे उसके चारों ओर घेरा बनाए हुए हैं और खिलौनों को छू-छूकर देख रहे हैं।

समर इन दिनों कॉलेज से छुट्टी लेकर घर पर ही रुका हुआ था। ज्यादातर पढ़ाई-लिखाई दूसरे शहरों में हुई थी, तो मोहल्ले के लड़कों से मिलना जुलना नहीं हो पाया था। इसीलिए अधिकतर समय, अपनी बालकनी से लोगों को देखकर व्यतीत करता था। उसे अपनी खुद की दुनिया में जीने की आदत थी। हर समय नए ख्याल बुनते रहना और यहाँ तक कि वक्त काटने के लिए उसने बालकनी में खुद का एक राज्य स्थापित कर लिया था। बालकनी में लगे पेड़-पौधे उसके राज्य की संपत्ति, उसमें खिलने वाले फूल राज्य कोष में शामिल हो जाते थे। उसकी कुर्सी उसकी राजगद्दी और खुद वहां का राजा। उसकी बालकनी के एक कोने से निकलने वाली चीटियों की पंक्ति उसकी सेना की टुकड़ी थी, जिसे दिन में दो बार मीठे के टुकड़ों से नवाजा करता था।

एक शाम, वह अपने पड़ोसी राज्य, यानी कि नीचे लगे बाजार में आते-जाते लोगों को देख रहा था। जैसे किसी मूर्तिकार के हाथ से उसकी बनाई मूर्ति का कोई अंश अछूता नहीं रह जाता, ठीक वैसे ही समर की नज़रें भी प्रतिदिन बाज़ार के हर कोने को टटोला करती। वह कभी सब्जी वालों को मोल-भाव करते सुनता, तो कभी शिल्पियों के कारीगरी के किस्से सुनता, फिर कहीं उसकी नज़र बच्चों की टोली के साथ दौड़ते हुए समोसे और गोलगप्पों के ठेले के पास जाकर रुकती। समर की नज़रों में वो सब उसकी प्रजा थे, जिन पर वो हर दिन मन ही मन में विजय हासिल किया करता। पर आज बाज़ार के उस शोर-शराबे में कही से शंखनाद की हल्की ध्वनि सुनाई पड़ती थी। मानो समर के पड़ोसी राज्य ने जंग का एलान कर दिया हो। समर की नज़र इस अप्रत्याशित द्वंद को भांप ना सकी और आज गोलगप्पे के ठेले पर अपना हथियार डालने को मजबूर हो गयी। एक साँवली सी मोहतरमा, आँखों पर काजल, कपाल पर छोटी सी टिकली, लम्बी चोटी, अपने लाल होठों से गोलगप्पे को दबाए और उसके तीखेपन को उंगलियाँ झाड़ कर भगाती हुई, गोलगप्पे वाले की रफ्तार में रफ्तार मिलाने की कोशिश कर रही थी। उसे पता ही नहीं था कि उसने अनजाने में किसके राज्य में जोरदार दस्तक दे दी है। समर की नजर ऐसे धराशायी हुई, मानो होठों से फिसल कर गिरा गोलगप्पे का पानी हो।

समर उसके हुस्न का इतना कायल हो चुका था कि मन ही मन उसे अपनी रानी मान बैठा था। अब वो हर रोज़ अपनी बालकनी में बैठा उसका इंतजार करता। कभी इंतज़ार खत्म होता या फिर रात दूभर कटती। समय के साथ उसके मन में उस लड़की से मिलने की लालसा तीव्र होती गई। उसने समझा कि हर रोज़ ऐसे बस देखने से बात नहीं बढ़ने वाली, अगर सच में उसे अपनी रानी बनाना चाहता है तो थोड़ी हिम्मत बढ़ानी होगी और उससे बात करने की कोशिश करनी होगी। उस रात समर ने निश्चय किया की अगले दिन वो बालकनी से नहीं, बल्कि गोलगप्पे वाले के पास उसका इंतज़ार करेगा और उससे बात करने की कोशिश करेगा। रात भर वो इसी अभ्यास में लगा रहा कि कैसे अगले दिन वो उससे बातें शुरू करेगा, कहीं वो उसे देख कर डर गयी तो, कहीं उसने बात करने से मना कर दिया तो, वगैरह- वगैरह। समर का मन उस छोटे बच्चे की तरह उत्सुक था, जिसे अगली रोज़ मेले में घुमने जाना हो। अगले दिन वह पूरी तरह से तैयार होकर, बालकनी से उस लड़की की राह देखने लगा और जैसे ही वो आते हुए दिखी, समर दौड़ता हुआ घर से निकाला और छुपता- छुपाता गोलगप्पे के ठेले पर जा पहुँचा।

उसका मन भय और रोमांच के मिश्रित भावों से उमड़ रहा था कि कब वो वहां आएगी और कैसे समर बातें शुरू करेगा। समर की गर्दन उसकी रानी के कदमों संग ताल से ताल मिला मुड़ती गई। जैसे-जैसे वो ठेले के समीप आती गयी, समर की धड़कने बढ़ती चली गई। उस दिन वो वहां नहीं रुकी। ठेले पर बिना रुके, उसको सामने से गुजरता देख, समर का दिल बैठ गया। समर हताशा की गहराईयों में हर बढ़ते कदम के साथ गिरता चला गया। उसकी रतजगी आँखों में उसकी रानी के प्रति

तृष्णा की लहरें उमड़ने लगी। वो आगे बढ़ते हुए बड़ी नाजुकता से अपना सर घुमाती है और उसे देख मंद सी मुस्कान बिखेर जाती है। समर व्यथा की गहराइयों से निकल कर सातवें आसमान पर पहुँच जाता है।

अगले कुछ दिनों तक उन दोनों की आँखों आँखों में बातें होने लगी। कभी बालकनी से, कभी घर के दरवाजे, तो कभी गोलगप्पे के ठेले पर। एक दिन समर ने ठाना कि वह उससे बात करेगा। उस शाम उसे रास्ते से आते देख, समर उसके पीछे हो लिया। कुछ दूर जब बाजार से हल्का आगे निकलकर, रास्तों पर भीड़ कम हुई, वो झट से रफ़्तार बढ़ा उसके आगे चला गया और पूछा

"आपका नाम क्या है?"

वो लड़की पहले तो थोड़ा चौकी पर उसके चेहरे के भाव तुरंत ही चंचलता में बदल गये। वो बोली,

"अरे! यह क्या तरीका है भला? ऐसे बीच सड़क लड़की को रोक कर उसका नाम पूछते हो। अभी शोर मचाऊँगी न, तो कुचल दिए जाओगे"

समर भी कुछ कम ना था, इतने दिनों के नैन-मटक्के से उसका साहस काफ़ी बढ़ गया था। खुराफ़ाती आवाज में बोला,

"कुचल तो उस दिन आपके होठों में दबे गोलगप्पे के साथ ही दिए गए थे"।

वो शर्मा गयी, बढ़ते हुए धीरे से बोली, "शोमल" और चलती गयी। समर भी बोला "और मैं समर"

अगले दिन से समर बालकनी में दो कुर्सियां लगाने लगा, एक खुद के लिए और एक उसकी रानी के लिए। ऊपर से सैनिकों की पगार भी बढ़ा दी। अब दिन में दो बार नहीं, बल्कि तीन बार मीठे के टुकड़े देने लगा। कुछ नए फूलों के पौधे भी खरीद लाया। कई दिनों तक यूं ही चलते-चलते बातें हुआ करती थी। एक दिन तो पीछे-पीछे समर उसके घर तक चला गया, पता जानने को। रास्ते भर शोमल उसको वापस जाने के इशारे करती रही, लेकिन वह भी ठहरा जिद्दी। समर काफ़ी खुश रहने लगा। नए-नए प्यार में जैसे युवाओं का दिल अपनी प्रेमिका के लिए कुछ भी कर गुजरने को करता है, उसकी हर ख़ुशी का ख़याल रखना, उसके जीवन का नायक बनना। समर के मन में भी इन्ही चीजों की उत्पत्ति हो चुकी थी। अचानक किसी दिन से शोमल उस रास्ते से आना बंद कर दी। समर बहुत परेशान रहने लगा। बिना उसे देख दिन-रात गुजारना मुश्किल हो रहा था। जब उसकी बेसब्री का बाँध टूटा तो वह चल पड़ा शोमल के घर की ओर। परेशानी और चिंता उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी। तेजी से कदम बढ़ाते हुए वह उसके घर जा पहुँचा। लेकिन अब इसके आगे क्या करना है, इस बारे में उसने कुछ नहीं सोचा था। वो सीधा अंदर भी नहीं जा सकता था और ना ही किसी तरह शोमल को बाहर बुला सकता था। वह बार-बार उसके घर के दरवाजे के बीच के छिद्र से झाँकता ताकि शोमल पर नजर पड़ सके, पर निराशा ही हाथ लगती। वह बेचैन हो शोमल के घर के सामने के सड़क पर चहल-कदमी करता रहा कि अचानक एक मधुर सा गीत उसके बेचैन दिल को आराम दे पहुँचा। जब उसे वहाँ कोई आता-जाता नहीं दिखा, तो वो उसके घर के दूसरी तरफ़ की एक दीवार पर हल्के से चढ़ा और अंदर में बिना ग्रिल की एक खिड़की में उसे शोमल दिखाई पड़ी। वो गा रही थी,

"एही ठैयां झुलनी हेरानी हो रामा, कासों मैं पूछूं?
सास से पूछूं, ननदिया से पूछूं, देवरा से पूछत लजानी हो रामा"

समर के हृदय को मानो ठंडक मिल गई हो। मानो किसी हिरण को मिराज के छल से मुक्ति मिल गई हो। वह उसके साँवले से चेहरे में, उसके लबों से निकल रहे उस मधुर गीत के बोलों में, उसके दर्द में खो गया। समर दीवार से उतरा और उसी की टेक ले खड़ा होकर गीत सुनता रहा। कुछ देर बाद जब गीत-गाना खत्म हुआ, तो समर अपने घर की ओर हो चला।

रास्ते भर वह शोमल के बारे में सोचता रहा, उसके सामने से उसकी रानी का चेहरा एक-एक करके गुजरने लगा। उसे उस मुस्कान के पीछे के घाव नजर आने लगे थे। वह समझ गया था कि वह गीत मदद की एक गुहार थी जो वह हर रोज मांगती है। और शायद इसलिए कि समर उसके दर्द का भागीदार न बने, उसने मिलना बंद कर दिया है। वह धुन पूरे रास्ते उसके दिमाग में घूमता रहा। घर पहुँच कर समर ने फैसला किया कि आज रात शोमल को उस पड़ोसी राज्य की कैद से छुड़ा लायेगा। उसे अपनी बालकनी में लगे सिंहासन पर बिठाएगा और वो सारे आदर-सम्मान देगा, जिसकी वह हकदार है। रात के साढ़े बारह बजे थे। पूरे मोहल्ले में सन्नाटा पसरा हुआ था। भले ही वो बाज़ार का इलाका था, फिर भी शाम के नौ बजे से ऊपर सिर्फ कुत्तों की ही आवाजें सुनाई पडती थी। सभी व्यापारी आठ बजे से पहले ही अपनी-अपनी दुकानें समेटना शुरू कर देते थे। समर अपनी रानी को लेने जा रहा था, सो उसे जंग की आशंका थी। इसीलिए वो घर के रसोई से एक धारदार चाकू लेकर अपनी पिछली जेब में रखा और दबे पांव घर से निकल गया। तेजी से कदम बढ़ाते हुए वह शोमल के घर तक जा पहुँचा और उसी दीवार से कूद कर, बिना ग्रिल के खिड़की से घुसा और सीधा शोमल के कमरे में जा धमका। कमरे में चाँद की हल्की सी रोशनी आती थी जो शोमल के चेहरे को लालायित कर रही थी। समर उसके बिस्तर के करीब गया और जाकर पहले तो कुछ देर शोमल को निहारता रहा, फिर हल्के से उसके गाल पर अपना हाथ फेरने लगा। शोमल की आंखें खुली और सामने किसी को बैठा देख उसकी चीख निकलने ही वाली थी कि समर ने उसका मुंह अपने हाथों से दबा दिया।

"चिल्लाओ नहीं, मैं तुम्हें ले जाने आया हूँ। साथ चलो, मेरे लोग तुम्हारी राह देख रहे हैं।"

शोमल ने उसका हाथ झटक दिया और जोर-जोर से चिल्लाने लगी, जिससे उसके घरवाले जाग गये। समर बार-बार शोमल को

समझाने की कोशिश करता रहा, पर वह चिल्लाए ही जा रही थी। समर दबी हुई आवाज में बोला,

"शोमल, मैं समर हूँ। डरो नहीं, चलो मेरे साथ"

इतना बोलकर उसने फिर से उसका हाथ पकड़ लिया। शोमल दोबारा उसका हाथ झटकी और बोली,

"कौन समर? कौन हो तुम? मैं नहीं जानती तुम्हें।"

समर को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। जिसे वह अब तक अपनी रानी बनाने के सपने देखता रहा, जिसके लिए आज वो इस जंग में उतर आया था, वह उसे पहचानने से इनकार कर रही थी। समर गुस्से से लाल हो गया। उसी समय दूसरे कमरे से लड़की के पिता भागते हुए आते है।

"सुमन ! क्या हुआ ? कौन हो तुम?"

समर ने आव देखा न ताव, अपनी जेब से छूरा निकाला और घुसा दिया उसके पेट में।

चीख़ और चीत्कार से आस-पड़ोस के सभी लोगों की नींद खुल गयी। उधर सायरन मारती गाड़ियां बाज़ार के रास्ते होते हुए गुजरती है। समर के पिता आँखें मलते हुए बालकनी में आते हैं, और वहाँ रखी दो कुर्सियों से टकरा जाते हैं। उनकी नज़र बालकनी के जमीन पर पड़ी हुई दवाइयों पर पड़ती है, जिसके इर्द-गिर्द चीटियाँ मंडरा रही थी। वह दौड़ते हुए समर के कमरे में जाते हैं और बिस्तर खाली पाकर हड़बड़ी में अपना फोन खोजते हैं, और किसी का नंबर डायल करते हैं।

"डॉक्टर साहब! समर फिर से कहीं चला गया हैं।"

दूसरी ओर से आवाज आती हैं,

"क्या! इतनी रात को। वह अपनी दवाईयाँ नहीं ले रहा था क्या?"

सहायक प्रबंधक (खनन)
मुनीडीह, पश्चिमी झरिया क्षेत्र
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

संकल्पों से भाव सजा हो

संकल्पों से भाव सजा हो, हर सपना साकार हो।।
करते रहें यत्न हम हरदम, हर सपना साकार हो

सही दिशा में कदम बढ़ाएं, मिल जाती फिर राह है।
हृदय निराशा मत कर हावी, पूरी होती चाह है।।
सुगम सुलभ हो पथ जीवन के,सुखमय तब संसार हो।।
करते रहें यत्न हम हरदम,हर सपना साकार हो।।

श्रम ही सुखद भविष्य सजाता,देता शुभ परिणाम है।
स्वेद कणों में चमके मोती,तन-मन दे आराम है।।
श्रम की जीत सदा ही होती, सुंदर घर संसार हो।
करते रहें यत्न हम हरदम, हर सपना साकार हो।।

रखें इरादे हम फौलादी, नहीं छोड़ना आस भी।
रखें लक्ष्य पर नजरें पैनी, मन में दृढ़ विश्वास भी।।
जीत सकेंगे रण जीवन के, अगर योजना धार हो।
करते रहें यत्न हम हरदम, हर सपना साकार हो।।

राहों में आतीं बाधाएँ, हिम्मत अक्सर तोड़तीं।
अड़े रहे जो जिद में अपनी, बाधाएँ पथ छोड़तीं।।
कमतर मत हम खुद को समझें, नहीं हार स्वीकार हो।
करते रहें यत्न हम हरदम, हर सपना साकार हो।।

कर्म साध्य है जीवन सारा, लक्ष्य एक ही ठान तू ।
ईश्वर अंश जगत में आया, कर अपनी पहचान तू।।
नेक राह चलते जाना है, भव से नैया पार हो।
करते रहें यत्न हम हरदम, हर सपना साकार हो।।

मूल्य समय का हम सब जाने, आदर्शों का साथ हो।
अनुशासन ही सफल बनाता, जुड़े रहे अब हाथ हो।।
हर पल आगे बढ़ते रहना, हमसे भी उपकार हो।

निर्मलता की बहती धारा, सरल मृदुल व्यवहार हो।
करते रहें यत्न हम हरदम, हर सपना साकार हो।।

✍ रिंकु दुबे 'वैष्णवी'
वाशरी प्रभाग,
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

लघु कथा

मेरे हिस्से की नींद

रोशन कुमार सिंह

ऑफिस से आते ही राकेश अपना बैग सोफे पर रखते हुए, 'सुनीता आज ऑफिस जाते वक्त रास्ते में मैंने एक किराए का मकान देख लिया है। दो बेडरूम, एक किचन और बाथरूम के साथ-साथ एक बड़ा सा हॉल भी है। मकान मालिक पाँच हजार मांग रहा था, पर मैंने उसे किसी तरह चार हजार महीने पर मना लिया है। कल ही जाकर एग्रीमेंट करवा लेता हूं।'

रसोईघर के अंदर से उसकी पत्नी सुनीता की आवाज आई, 'इतनी जल्दी भी क्या थी? कुछ दिन और रुक जाते।' राकेश इस पर जवाब देता है, 'अरे नहीं सुनीता, तुम तो रोज देख ही रही हो, कितनी परेशानी हो रही है। रोज सुबह तीन बजे से ही मां-पिता जी का भक्ति-भजन चालू हो

जाता है। रात को भी ये लोग देर से सोते हैं। पता नहीं इन्हें नींद क्यों नहीं आती? चिंटू की अगले महीने से परीक्षा भी है। वह अपनी पढ़ाई पर कंसंट्रेट नहीं कर पा रहा है। अब बस आज ही शाम को मां-पिताजी को इसकी जानकारी दे देता हूं। वह भी खुश, हम लोग भी खुश। आखिरकार पैसे तो मुझे ही देने हैं और किराए का घर ज्यादा दूर नहीं है। महीने में एकाध बार मिल लिया करेंगे। इस छोटे से घर में सभी का रहना ऐसे भी मुश्किल है, और तू ज्यादा टेंशन मत ले, हाल-चाल के लिए एक सेकंड हैंड फोन भी पिताजी को दे दूंगा।'

दूसरे कमरे में बेड पर लेटे राकेश के पिता रामेश्वर जी सारी बातों को सुन रहे थे। तभी उनकी बूढ़ी पत्नी कौशल्या जी आकर कहती हैं, 'अगर तुमने भी सब सुन लिया है तो अब बस तैयारी करो। तुम्हें तो नींद आती नहीं और तुम्हारे कारण घर के दूसरे सदस्यों को भी दिक्कत होती है।' रामेश्वर जी गुस्से में, 'अरे सदस्य.... ये क्या बोल रही हो कौशल्या? हम सभी इस घर के केवल सदस्य हैं, अरे वह मेरा बेटा है और मैं उसका बाप हूँ। आज जो मेरी आंखों से नींद गायब हैं उसी कुर्बानियों का परिणाम है कि तुम्हारा बेटा इंजीनियर है और भूलो मत बेटी को विदेश में ब्याहा है मैंने। हाँ, इन सब के चक्कर में बड़ा घर जरूर नहीं बना पाया। आज जब जिम्मेवारियों को पूरा करते-करते मेरी नींद गायब हो गई तो मेरी मौजूदगी मात्र से इनकी जिंदगी में खलल पड़ रही है। अरे! कौशल्या, इनकी सफलताओं में कहीं ना कहीं मेरे हिस्से की नींद छिपी हुई है। बता दो इन्हें।'

कमरे के बाहर चुपचाप बेटे और बहू अपने मां पिताजी की बातें सुन रहे थे। तभी चिंटू कहीं से दौड़ता हुआ आया और बोला 'दादाजी-दादाजी बाहर चलो, देखो मैंने कितना सुंदर रेत का एक घर बनाया है।' चिंटु बेटा, मेरे जाने के बाद यह भी तो एक रेत का घर ही रह जाएगा।' तभी चिंटू आश्चर्यपूर्वक, 'जाना है, आपको कहां जाना है दादा जी?' कुछ नहीं बेटा.... बस चल अपना रेत का घर मुझे अब दिखा।

लिपिक, सिजुआ क्षेत्र
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

यात्रा संस्मरण

पैसेंजर ट्रेन का सफ़र

✍ राजीव रंजन

पैसेंजर ट्रेन से सफर करने का अपना ही आनंद है। घंटे-दो घंटे भर के इस सफर में आपको मैला आँचल उपन्यास से अधिक पात्र मिल जाते हैं। कई कहानियाँ मिल जाती हैं। अपने आसपास के वातावरण को रुचिकर दिखाने के लिए कल्पना शक्ति की विशेष आवश्यकता नहीं पड़ती। चारों तरफ भिन्न-भिन्न किरदार बिखरे पड़े मिलते हैं। बिखरे इसलिए, क्योंकि बैठने वाले स्थान से अधिक लोग आने जाने के रास्ते, सामान रखने वाली जगह और दरवाजे के सामने बैठे मिलते हैं। बाथरूम के पास वाला इलाका भी भरा रहता है। कोई ट्रेन के दरवाजे के पास से हटना नहीं चाहता तो कोई बगल वाली इकलौती पड़ी कुर्सी के ऊपर सामान रखने वाले संकरे से जगह पर मदमस्त सोया पड़ा मिलता है। गाड़ी में चाहे पैर रखने की भी जगह क्यों न हो? सामान बेचने वाले के नज़रिए से उसमें से अब भी एक राजमार्ग निकाल लेने की जगह खाली रहती है। मेरे बगल में बैठे एक चाचा जी हर किसी के गप्प में अपनी बात रख लेने का अवकाश निकाल ले रहे हैं। कजरा स्टेशन के पास खिड़की के नज़दीक बैठे एक बेचारे का फ़ोन किसी ने खींच लिया। उस वक़्त से अब तक, ट्रेन से फ़ोन खींचे जाने की इतनी कहानियाँ सुनने को मिली है कि उससे 2-3 कहानी-संग्रह तो सहजतापूर्वक प्रकाशित करवाए जा सकते हैं। एक 5-6 साल की बच्ची मेरे सामने की कुर्सी पर बैठी मूंगफली खा रही है और हर बार मुझसे नज़र मिलने पर लजा कर अपनी गहरे श्यामवर्णी माँ के आँचल में समा जा रही है। एक अधेड़ औरत अभी कुछ देर पहले ही गाड़ी में धोती से बंधी एक बड़ी सी पोटली ले कर चढ़ी है और उस बच्ची की हरकत देख उसमें अपनी खुशी ढूंढ ले रही है। हल्की सी मुस्कान के साथ वो पहले इधर उधर नजरें घुमाती है फिर किसी अज्ञात संकोच में पड़ कर उस मुस्कान को हँसी में बदलने से पहले ही अधूरा छोड़ देती है। इस दृश्य से निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' कविता जीवंत होती लग रही है। किउल स्टेशन पर एक व्यक्ति अपने 10-12 साल के बच्चे के साथ चढ़ा और थोड़ी दूर पर बैठी एक महिला के पास बच्चे के बैठने जितना जगह पाकर उनसे बोलता है- "आपका ही बच्चा है, थोड़ा बैठा लीजिये न!" जिसे सुनकर ऊपर बैठे तीन लड़कों का समूह एक दूसरे की तरफ देख कर एक साथ खिलखिला उठते हैं।

ऐसी न जाने कितनी घटनाएँ एक साथ घटित हो रही है। यहाँ न चाहते हुए भी हर एक शख़्स अपनी कहानी कह रहा है, लेकिन इसे सुनने की किसी को फुर्सत नहीं है।

मेरा गंतव्य आने वाला है। मेरे बगल में खड़ा एक लड़का मेरी सीट हथियाने की ताक में है। उसे पता भी नहीं है कि उसके सामने से एक अनपढ़ी कहानी उठ कर जाने वाली है। एक कहानी के उठते ही दूसरी कहानी उसका स्थान लेने को प्रतीक्षारत है। ऐसी ही न जाने कितनी कहानियाँ इस पैसेंजर ट्रेन में हर वक़्त कही जाती रहती होंगी और पाठक के अभाव में निराश हो कर अपना स्थान छोड़ किसी पूर्व निर्धारित गंतव्य पर उतर जाती होगी।

उप प्रबंधक (असैनिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

उत्सव

उत्सव-ए-मेघ मल्हार

हर वर्ष की भांति बीसीसीएल दीक्षा महिला मंडल के सौजन्य से इस वर्ष भी सावन महोत्सव के अवसर बीसीसीएल सामुदायिक सभागार, कोयला नगर में एक समारोह का आयोजन **'उत्सव-ए-मेघ मल्हार'** नाम से किया गया। समारोह में कोल इंडिया अध्यक्ष श्री पी. एम. प्रसाद की धर्मपत्नी एवं कोल इंडिया महिला समिति की अध्यक्ष श्रीमती पी. विमला प्रसाद मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उनके साथ ही कोल इंडिया के अन्य निदेशकगणों की धर्मपत्नियां तथा कोल इंडिया महिला समिति की पदाधिकारियों में श्रीमती रेणुका वर्मा, श्रीमती शोभा रेड्डी, श्रीमती रिंकी नंदा, श्रीमती अर्चना चौधरी, श्रीमती नंदिनी त्रिपाठी एवं श्रीमती निधि अग्रवाल भी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम के आरंभ में बीसीसीएल दीक्षा महिला मंडल की अध्यक्ष एवं सीएमडी बीसीसीएल श्री समीरन दत्ता की धर्मपत्नी श्रीमती मिली दत्ता ने स्वागत संबोधन किया। कोल इंडिया महिला समिति की अध्यक्ष श्रीमती पी. विमला प्रसाद ने अपने संबोधन में कहा कि बीसीसीएल मेरे हृदय के अत्यंत करीब है। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि बीसीसीएल की हमारी सभी बहनें श्रीमती मिली दत्ता के नेतृत्व में समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए निरंतर कार्य कर रही हैं। मुझे उम्मीद है कि भविष्य में भी हम इसी सक्रियता के साथ समाज सेवा के कार्य करते रहेंगे।

हर बार की तरह कार्यक्रम में सावन क्वीन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, इसमें श्रीमती संध्या कुमारी को सावन क्वीन का खिताब दिया गया तथा श्रीमती सुमन सिंह एवं श्रीमती बंदना सरकार उप विजेता रहीं। फूल, पत्तियों एवं झूले आदि की सजावट के बीच गीत संगीत के साथ-साथ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने समारोह में चार चांद लगा दिये। कार्यक्रम के अंत में दीक्षा महिला मंडल की उपाध्यक्ष श्रीमती पूर्बिता रमैय्या ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी के सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। इस दौरान दीक्षा महिला मंडल की उपाध्यक्ष श्रीमती नमिता सहाय, श्रीमती रंजना सिंह एवं डॉ. नेहा दास का भी विशेष मार्गदर्शन रहा।

विशिष्ट गतिविधियाँ

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर दिनांक 21 फरवरी, 2024 को कोयला भारती अंक-40 का विमोचन करते हुए कंपनी अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता, निदेशक (कार्मिक) श्री मुरली कृष्ण रमैया, महाप्रबंधक (का./राजभाषा) श्री बिद्युत साहा और अन्य।

दिनांक 02 मार्च, 2024 को कंपनी की केंद्रीय सलाहकार समिति की नियमित औपचारिक बैठक का आयोजन किया गया।

दिनांक 19 जून, 2024 को कोयला भवन में त्रिपक्षीय सुरक्षा समिति की एक उच्च स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में बीसीसीएल प्रबंधन, खान सुरक्षा महानिदेशालय और कंपनी के कॉरपोरेट सुरक्षा बोर्ड के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

दिनांक 14 अप्रैल, 2024 को बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के जन्मदिवस के अवसर पर कोयला नगर स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली के सहयोग से दिनांक 22-26 अप्रैल, 2024 के दौरान 'पांच दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम' का आयोजित किया गया।

01 मई, 2024 को अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर भारत कोकिंग कोल लिमिटेड मुख्यालय में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक महोदय ने कंपनी के निदेशकों एवं अन्य उच्चाधिकारियों के साथ कोयला नगर स्थित शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कोयला उद्योग के शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

Verma Enterprises, Dhanbad, Mob 94313 14776